Chap-5

==============================================

:: पंचम अध्याय ::

: शैलेश मटियानी की कहानियों में चित्रित विशिष्ट नारी-चरित्र :

==============================================

## :: पंचम अध्याय ::

## :: मटियानीजी की कहानियों में चित्रित विशिष्ट नारी-चरित्र ::

### प्रास्ताविक :

मटियानीजी की नारी-विषयक विचारधारा उदात्त-भूमिका पर अवस्थित है । नारी के महतारी रूप , देवी रूप , माता-रूप के तो वे परम भक्त हैं । वैसे भी कुमाऊँ प्रदेश में शक्ति-पूजा का विशेष महत्त्व है । अतः नारी का जो उदात्त-रूप है , उसका चित्रण मटियानीजी की अनेक कहानियों में उपलब्ध होता है । नारी के इस उदात्त रूप की ही प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने नारी के अविद्या रूप , कुलटा-स्वरूप की भर्त्सना की है । नारी की गरिमा , उसकी अस्मिता और उसके गौरव के सन्दर्भ में दुनिया-भर के महान चिन्तकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं ।, जिनमें से कुछेक के विचार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं :-

1. पुरुष के पास दृष्टि होती है , पर स्त्री के पास

दिव्य दृष्टि । — विक्टर ह्यूगो.

2. प्रेम किस प्रकार किया जाता है, इसे केवल नारियां ही जानती हैं। — मोपासां.

3. जो नारी पतिव्रता होगी, उसे अपने पर गर्व होगा।
— बेकन.

4. नारी की उन्नति अथवा अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति आधारित है। — अरस्तू.

5. नारी नर की सहचरी, उसके धर्म की रक्षक, उसकी गृहलक्ष्मी तथा उसे देवत्व तक पहुंचाने वाली साधिका है। —
— डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन.

6. नारी को अबला कहना उसका अपमान है। — गांधीजी.

7. समाज के आचरण को बनाना, घर का प्रबन्ध करना तथा कोमलता, प्रेम और सहनशीलता से जीवन की विषम यात्रा को सरल और सुखद बनाना नारी का काम है। — ग्रियर्सन.

8. पुरुषों के पास केवल इच्छाएं हैं, स्त्रियों के पास उन्हें पूरा करने की युक्तियां हैं। — होम्स.

इस प्रकार की अनेकों सूक्तियां नारी के सन्दर्भ में मिल सकती हैं। आलोच्य लेखक ने भी अपनी कहानियों में नारी की विशिष्टता, महत्ता, गरिमा और करुणा का आलेखन अनेक स्थानों पर किया है। प्रस्तुत अध्याय में ऐसे कुछ विशिष्ट नारी-चरित्रों× चरित्रों को अंकित किया गया है। यहां निरूपित विशिष्ट नारी-चरित्र किसी-न-किसी अर्थ में अपनी विशेषता रखते हैं। दूसरे यह भी ध्यातव्य है कि ऐसे नारी चरित्र गरीब-अमीर, उच्च-निम्न, हर प्रकार के परिवेश में उपलब्ध होते हैं। गरीब से गरीब और निम्न से निम्न प्रकार के समाज में कई बार मानवता की महक फैलाने वाले नारी-चरित्र मिल जाते हैं।

1. पद्मावती :

"सुहागिनी" कहानी की पद्मावती एक विरल नारी-चरित्र है । शादी-ब्याह के अवसर पर शकुनाखर गाने में उसका कोई सानी नहीं है । पर स्थिति की यह भी कैसी विडम्बना है कि जो सभी के शादी-ब्याह में शकुनाखर गाती है, उसकी ही शादी नहीं हो पाती । कारण है गरीबी । पद्मावती ब्राह्मण कन्या है । ब्राह्मणों में कन्या की शादी में खूब दान-दहेज देना पड़ता है । पद्मावती के भाई बुद्धिवल्लभ पुरोहित के पास उतना धन नहीं है । भाई बुद्धिवल्लभ और भाभी लीलावती दोनों को पद्मा की बहुत चिन्ता है, पर वे बेचारे लाचार हैं । लेखक ने इस संदर्भ में लिखा है —

" ब्राह्मण-कन्या तो पैसे वालों की भी बहुत परेशानियों के बाद ब्याही जाती, वह तो एक दरिद्र परिवार की कन्या थी और वह भी क्षीणकाय, कुरूपा । ... लीलावती बोज्यू को, जब कहीं लगन छाये, तब इसी विषाद में देखा गया कि सोने-चांदी के आसन पर बिठा कर बिदा करने की क्षमता हो, तो कुब्जा भी कान्ता बनाई जा सकती है, मगर दान-दहेज से रीती, सूखे काठ जैसी काया को कौन देगा अपने घर में बहू का आसन ? " [2]

पुरोहित बुद्धिवल्लभ एक धर्मभिरु कर्मकाण्डी पंडित है । उनको डर है कि यदि पद्मा का ब्याह नहीं हो पाया तो उनकी सद्गति नहीं होगी । अतः वे सोचते हैं कि पद्मा का "घट-विवाह" करा दिया जाय । पद्मा को यह अच्छा नहीं लगता । पर पिता समान बड़ा भाई जब गिड़गिड़ाकर कहता है, तो पद्मा मना नहीं कर सकती । यथा —

"पद्मा, मेरा अन्त समय आ गया लगता है । बहुतों की

सद्गति की , तारण किया , मगर अब अपना ही तारण दुर्लभ हो रहा । तेरा भाई-पिता जो कुछ हुआ , अभागा दरिद्र ब्राह्मण मैं ही तो हुआ , पद्मा ! भाई धर्म नहीं निभा सका , मगर तू तो कल्याणी कुललक्ष्मी हुई ! तू अपनी दया निभा दे ! तुझे सुहागिन देखने से मेरा तारण हो जायेगा । लली , इतना तो मैं भी समझता हूं कि तांबे का कलश कंकण-मंगलसूत्र ही दे सकता है , सुहाग का सुख नहीं , मगर ... "[3]

और भाई की सद्गति-तृष्णा के लिए पद्मावती "घट-विवाह" के लिए राजी हो जाती है , इतना ही नहीं , अपने सुहाग-धर्म का निर्वाह भी करती है । वह तांबे के उस कलश को ही अपना पति मान लेती है और उसी रूप में रात-दिन उसकी सेवा करती है । तभी तो पद्मावती की भाभी बीलावती कहती हैं —

" हमारी पद्मा ललीज्यू बड़ी तपस्विनी हैं । जितनी सेवा-टहल इस तांबे के खसम की करती है , उतनी तो मैं अपने हाड़-मांस के स्वामी की भी नहीं कर सकी ... ! आखिर कहीं पद्मावती ललीज्यू के ही कुम्भ से तो नहीं जनमेगा फिर से कोई अगस्त्य मुनि ? "[4]

एक बार बच्चों की असावधानी के कारण कलश गिर जाता है तो पद्मावती खूब विलाप करती है । तब गंगासिंह हेडमास्टर की नयी घरवाली कहती है — " छि-छि ! एक तांबे की गिटरी के लिए ऐसा करुण विलाप करते शरम भी नहीं आ रही , पद्मा बौराणज्यू को ! अरे , यह फूट गया तो क्या दूसरा नया कलश नहीं मिल सकता बाजार में ? "[5]

इस पर पद्मावती बाघिन-सी बिफर उठती है — " चुप रह , ओ खसिणी ! मैं कोई तुझ जैसी तिथरिया पातर नहीं । नया कलश नहीं

मिल सकता कहती है राँड । अरी , तू ही ढूंढती रह , तुझे ही मुबारक हों नये-नये खसम । मैं तुझ-जैसी कमनियत खसिणी नहीं हूं — पतिव्रता ब्राह्मणी हूं । कसम है तुझे तेरी ही औलाद की — तू मत रोना जब तेरा भी खसम मरे तो । — मुझे तो यह कुम्भ भी पति-समान ही ठहरा — और सदा पति-समान ही रहेगा । " 6

पद्मावती के उक्त प्रण्य-प्रकोप में उसकी भक्ति , उसकी श्रद्धा , उसका पातिव्रत्य-धर्म , उसकी सहनशीलता , उसका तप ये सब मानो एक साथ वाणी का रूप धारण करते हैं । इस बात को लेकर स्वयं उसकी भाभी लीलावती जब उसे ढाढस बंधाते हुए कुछ कहती है , तो उसे भी पद्मावती सुना देती है — " अरे , बोज्यू , तुम क्यों नहीं कहोगी ऐसा । तुम भी तो अब विधवा हो , विधवा । तुम क्या समझोगी कि सुहागिनी के मन की व्यथा क्या होती । " 7

इस प्रकार पद्मावती का अपनी भाभी को यों सुना देना थोड़ा औचित्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता । परंतु पद्मावती के लिए सर्वोपरि है उसका पतिव्रता धर्म । उसके सम्मुख वह किसीको कुछ नहीं गिनती और तब पद्मावती का उक्त कथन हमें समीचीन ही नहीं सुन्दर भी लगेगा ।

२- <u>कमलावती :</u>

" वीरखम्भा" कहानी की कमलावती एक वीर क्षत्राणी है । ऊँचियाली गांव के थोकदार भजंतासिंह की वे धर्मपत्नी हैं । कमलावती के कारण ही सुपियाली गांव और ऊँचियाली गांव के बीच पुश्तैनी वैर चल रहा है । ऊँचियाली गांव के थोकदार हनुमंतासिंह ने सुपियाली गांव के ठाकुर सबलसिंह के यहां अपने बेटे भजंतासिंह के रिश्ते के लिए पुरोहित भेजा था । सबल ठाकुर उस रिश्ते को ठुकरा

देते हैं । हनुमंतासिंह यह बात नागवार गुजरती है । इसे वे अपना अपमान समझते हैं । अतः अपने बेटे भजंतासिंह को बुलाकर वे कहते हैं -- " जा रे, भजंता ! है मेरा पूत, तो बेटे ! सुपियाली गांव के सबल ठाकुर से सोने की नथ छीन ला । नहीं, कुल में कायर जन्मा है, तो ऊंचियाली गांव की सीमा के बाहर जाकर सुपियाली में ही कहीं डूब मर । " [8]

और वह आज का बुद्धिजीवियों का, कायदे-कानून वालों का दौर तो था नहीं । वहां मनुष्य बुद्धि से कम भावना से ज्यादा परिचालित होता था । अतः भजंता अकेले हाथ में फरसा लेकर सुपियाली गांव के खेतों में पहुंचा था और कमलावती को एक हाथ से पकड़कर सुपियाली गांव के लोगों को खुली चुनौती देते हुए बोला था — " सुनो रे ! सुपियाली गांव वालो ! तुम्हारे गांव से सोने की नथ खींचकर ले जा रहा । है तुम लोगों को अपनी नाक की शरम, तो आओ, ×छम्र छीन ले जाओ । नहीं तो चुपचाप खेतों में धान गोड़ते रहो । असोज के महीने में बाल पकेगी, तो बासमती की खुशबू लेकर संतोष कर लेना कि कहीं× नहीं, अभी हमारी चमड़े की नाक तो मुंह पर ही है ! " [9]

जमाना वह वीरपूजा का था । स्त्रियां भी वीरों का वरण करती थी । कमलावती भी एक ऐसी ही क्षत्रिय-बाला थी । भजंता को वह अपना पति स्वीकार कर लेती है । बाद में सबल ठाकुर अपने गांव के थोकदार बिकरमसिंह के साथ पूरे सवा-सौ लट्ठ-फरसों से लैस रण-बांकुरों को लेकर धावा बोल देता है । तब थोकदार हनुमंतासिंह सबल ठाकुर को कहते हैं —

"सबल ठाकुर, तेरे घर की सोने की नथ मैंने घर में नहीं छिपा रखी । पहले तू अकेला आ । बुला ले जा अपनी बेटी को । यह मेरे कुल की प्रतिष्ठा बनी है । अपने-आप उतर के तेरे साथ चली जाती

है , तो चुपचाप लौट जाऊंगा । नहीं जायेगी तेरे बुलाने पर , तो तब तुम लोग लट्ठों के जोर से उतार ले जाना । कम-से-कम फैसला तो हो जायेगा कि मां के घुटनों से भी दूध फूटा करता है या नहीं । " 10

सबल ठाकुर विकरम के संकेत पर अपनी बेटी के पास आकर उसे लौट आने के लिए कहते हैं , तब कमलावती उनके पांव छूकर कहती है — " पाप के वचन पिता के मुंह से शोभा नहीं देते बौज्यू । भांवरें सात फिराई जाती हैं , मगर जिसके सहारे फिराई जातीं , वह लोक-लोकान्तरों के लिए एक ही होता । हाथ जोड़ती हूं , लौट जाइये । आना होगा , तो मान-भरम से आयें । अपनी घर-गृहस्थी , अपना कुल छोड़कर अब मायके की ठौर को नहीं लौटूंगी । लौटूंगी तो उस दिन , जिस दिन मेरे भाई चैत के महीने में न्यौतने आयेंगे । " 11

यहां कमलावती का शील , स्वभाव , नम्रता , कुलीनता , दृढ़ता , कुल-धर्म के प्रति उसकी निष्ठा , पति-धर्म के प्रति उसका विश्वास उसे एक विशिष्ट नारी-चरित्र का रूप दे देते हैं । तभी तो पिता-समान ससुर हनुमंता सिंह कहते हैं —

" मेरी बहू-बेटी , छोटी न होती तो तेरे पांवों में अपने सिर की पगड़ी रख देता , लाड़ली । तेरे पांव क्या पड़े , मेरे कुल-वंश उजागर हो गये , बहू । तूने लाज रख ली हमारी , तो हम भी भूलेंगे नहीं । आज से तू मेरी बेटी भी हुई । " 12

3- <u>परतिमा चाची</u> :

" घर-गृहस्थी " कहानी की परतिमा चाची एक जाज्वल्यमान नारी-चरित्र है । "मैनेजमेण्ट" या " हाउस-कीपिंग" का कोर्स उन्होंने नहीं किया , पर अपनी विशाल गृहस्थी को जिस तरह वह चला रही

हैं , उसे देखकर उनके प्रति अहोभाव पैदा हुए बिना नहीं रहता । गाँव भर में सबसे बड़ी गृहस्थी थी उनकी । सबसे फैला हुआ कारोबार । सिर पर पति की छाया नहीं रही , पर भार तो पूरे कुटुम्ब का है । लगभग चौंसठ वर्ष होने आये , पर शरीर में आलस्य का नाम नहीं । जैसा बल हाथ-पांवों में , वैसी ही मिठास सरस्वती में । चार बेटे , चार बहुएं । छोटा सूरजसिंह पलटन में है । उससे बड़ा देवीसिंह दुकानदारी में लगा हुआ है । तीसरा सोबनसिंह सहकारी स्टोर में काम कर रहा है । चौथा , सबसे बड़ा श्यामसिंह खेती-बाड़ी को संभाल रहा है ।

परतिमा चाची का स्वभाव ऐसा है , उनकी वाणी में इतनी मिठास है कि उनकी अपनी-तो अपनी पास-पड़ोस की दूसरी बहुएं भी उनका काम करके स्वयं को धन्य समझने लगती हैं । यथा —

" बहू , जैसी लाज तूने मेरे मुख के वचनों की रख ली , ऐसी तो कोई अपनी सगी सास की भी नहीं रख सकती । मेरी लाड़ली , हजारी जैसी फूले , बेल -जैसी फल जाए तेरी गृहस्थी । ... तो काम करने वाली काम-का-काम निवटा गई , और जाते समय , मेहनताना मांगने की जगह , पैरों पर हाथ अलग से रख गई कि - " सासू , हमें तो तुम्हारा आशीर्वाद चाहिए , बस । " [13]

परतिमा चाची के हाथ-पांवों का बल घटा , मगर कारोबार तो घटने की जगह बढ़ता ही गया । परन्तु एक बार ऐसा हुआ कि खेती-बाड़ी के काम में मर्दों के हाथ का काम तो संभल गया , पर औरतों के काम में थोड़ी अटक पड़ गई । बड़ा परिवार था । देवरानी-जिठानियों में कभी-कभार तू-तू मैं-मैं हो जाती । दूसरे संयुक्त परिवारों में स्त्रियों में यह मानसिकता जन्म लेने लगती है कि "एक मैं ही थोड़े हूं काम करने वाली । " और ऐसे में एक का आलस और ~~xxxx~~ आराम दूसरे को भी व्यापने लगता है ।

परन्तु परतिमा चाची ऐसे बुद्धि-चातुर्य से काम लेती है कि आलस्य के स्थान पर बहुओं में काम की होड़-सी मच जाती है । परतिमा चाची ∗ सबको लाड़-प्यार करती है, दूध-घी देती है, पर अलग-अलग । प्रत्येक बहू को ऐसा लगता है कि जैसे सास उसीको ही सबसे ज्यादर प्यार करती है और उसीको ही ज्यादा महत्व देती है । फलतः जो फसल बीस-xxx बाईस दिन में एक-तिहाई भी नहीं सहेजी गई थी, वह सात-आठ दिनों में करीब-करीब पूरी हाथ आ गई । गांव के लोग चक्कर में आ गए कि कहां तो परतिमा चाची की फसल खेतों में ही झड़ने की नौबत आई थी, वहां अब एक-एक बाल बिनकर छत-आंगन में पहुंच गई । तब शाम को घर की देली पर निश्चिंतता के साथ बैठी हुई परतिमा चाची सभी बहुओं को सुनाते हुए कहती है — अरे, घर-गृहस्थी की असली शोभा तो छत-आंगन में इकट्ठी फसल से बढ़ती । इतना कहकर, हाथ में थमी चिलम गुड़गुड़ाते हुए, अब जो परतिमा ने एक, उड़ते पंछी-सा ठहाका लगाया, तो हंसी देxxx देली xx के समीप की सीढ़ियों पर से उतरती, सारे घर-आंगन में फैल गई । " [14]

बहुओं से परतिमा चाची किस प्रकार काम लेती है उसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा । देवीसिंह जो दुकानदारी करता है, उसकी धर्मपत्नी है भगवती । एक दिन जब वह पानी भर के आती है, तब उसकी तारीफ़ करके वह उसे खुश कर देती है और फिर आलमारी से दूध का गिलास, रोटी और गुड़ की डली देते हुए कहती हैं — " ले जल्दी-जल्दी खा ले । अब सभी के लिए कहां से लाऊं मैं दूध-गुड़, मगर तुझे एक मास ठीक से न मिले, तो तेरी देह टूटती जाएगी । एक तो आंचल से भारी ठहरी तू, उस पर खेती के काम-काज का रौला । खैर, काम-काज का जहां तक सवाल है, जितनी मिहनत करो, उतना

अपना शरीर चंगा रहता । मैं तेरे सामने ही तो हूं यहीं ! जब तक खेतों में दौड़ती फिरती थी , उत्तम पधान कहा करते कि परतिमा भौजी की जनम कुण्डली में चितरगुप्त ने तिरसठ्ठी काट करके , तैंतीस लिख दिया ! और अब चार महीने से लाचार पड़ी हूं , तो तेरे लिए दूध का गिलास आलमारी से निकालने में ही पांव दुख गया । " .... और भगवती ने दूध-रोटी निबटाकर , परतिमा चाची का पांव दबाना शुरू कर दिया -- " कहां पर दुखता है , इधर ? जरा तेल के हाथ से मालिश कर दूं । " .... परतिमा ने भगवती के सिर पर हाथ रख दिया -- " लाख बरस की उमर हो जाय तेरी बहू ! आंचल दूध से , सुहाग-सिन्दूर से सदा भरपूर रहे , यही मुझ लाचार बुढ़िया की दुआ । जैसी सेवा तू करती मेरी , ऐसी सेवा तो कोई बेटी अपनी मां की भी नहीं करती होगी । तू तो इस कुटुम्ब की साक्षात् भगवती हुई , बहू ! ले , तूने ज़रा हाथ फिराया नहीं कि दुख जाने कहां को चला गया । ... अच्छा , अब तू जा बहू ! जाने को तो पारवती तुझसे भी पहले खेतों में चली गई , मगर उसके हाथों में तेरी जैसी फुरती कहां ? " [15]

इस प्रकार परतिमा चाची कुशलतापूर्वक {टैक्टफुली} सभी बहुओं को अपनी चिकनी-चुपड़ी मधुर बातों से पानी-पानी कर देती है और घर-गृहस्थी का तथा खेती-बाड़ी का काम उनसे खूब सिफ्त से करवा लेती है ।

## ५. लाटी :

"लाटी" कहानी की उत्तमा लाटी एक गूंगी स्त्री है । वह डिगरराम नामक एक हद दर्जे के झिंगाली , पलीत और काने भिखारी के साथ रहती है । जब डिगरराम की मृत्यु होती है , तब लाटी के विकट विलाप से अलमोड़ा-पिथौरागढ़ के सारे पड़ावों

में हाहाकार मच जाता है । पति की मृत्यु पर तो सभी स्त्रियाँ रोती हैं , पर कुछ दूर तक जाकर अन्य स्त्रियों के साथ वापस लौट जाती हैं , परन्तु लाटी तो झांझी को छोड़ने का नाम ही नहीं लेती और ढाई मील तक उसके साथ-साथ विकट विलाप करती हुई जाती है । इस सन्दर्भ में लेखक की यह टिप्पणी ध्यातव्य है —

" पति कैसा भी गया-बीता हो , उसके मरने पर दुःख स्वाभाविक है और कातर होकर रोना भी — मगर डिगरवा जैसे झिंगाली और काने भिखारी की मृत्यु पर उत्तमा लाटी अपने गूंगे गले से ही घण्टों तक इतना करुण और विकट विलाप करती रहे , जितना पतिव्रता ठकुरानियाँ और बहुरानियाँ भी नहीं , यह बात सभीको चुभ रही थी और लाटी का विलाप लोगों को अब कृत्रिम प्रदर्शन लगने लगा था । " [16]

अतः बनारसी बुकसेलर आक्रोश में भरकर उससे पूछता है — " अब संगमरमर की मूरत-जैसी खामोश क्यों बैठी है , ससुरी ! बोल ? अरे रांड ! कुछ तो बोल कि अपने खसम के मरने पर तू क्यों ढाई मील तक मुर्दे के पीछे चुड़ैल-जैसी चली आई और क्यों तूने नौटंकी-जैसी भीड़ इकट्ठी कर ली है यहां ? " [17]

इस पर लाटी जिस सांकेतिक भाषा में बालकृष्ण की छवि को पेट के पास ले जाकर बताती है , उससे इतना फलित होता है कि उसे बच्चा होने वाला है और डिगरवा के मरने पर वह इस बच्चे का पालन-पोषण कैसे कर पायेगी । इस प्रकार लाटी को डिगरवा के मरने का दुःख तो है ही , भविष्य की चिन्ता भी उसे खाए जा रही है । कहानी में यह भी संकेतित हुआ है कि बनारसी बुकसेलर ने लाटी पर बलात्कार किया था । यह बच्चा उसका भी हो सकता है । इस प्रकार लाटी के माध्यम से

लेखक ने मानवीय संवेदना और उसके दर्द को भलीभाँति उद्घाटित किया है ।

5-लछिमा :

"अंतिम तृष्णा " की लछिमा भी एक विशिष्ट नारी-चरित्र है । लछिमा रतनसिंह की ब्याहता स्त्री है । दोनों में बहुत ही प्रेम होता है । पहाड़ के शहर से लगे गाँवों में किसान दूध बेचने का काम भी करते हैं , और "हर भैंस के पीछे नौली" यह कहावत वहाँ आम है । परन्तु रतनसिंह और लोगों जैसा नहीं था । वह नौली लाने वालों को कोसता रहता है । वह लछिमा को मेले-ठेले में भी ले जाता है । सिनेमा दिखाने भी ले जाता है । अभिप्राय यह कि वह लछिमा को बहुत ही ज्यादा चाहता है । परंतु जैसे मीठे फल में कीड़े जल्दी पड़ते हैं , वैसे लछिमा भी बीमार पड़ जाती है । बीमारी के दिनों में रतनसिंह कई बार लछिमा के आगे कसम खाता है , और बढ़-चढ़ के बातें करता है , कि वह उसके पीछे नौली नहीं लायेगा । पर लछिमा को तपेदिक हो जाती है । तपेदिक उन दिनों एक असाध्य बीमारी मानी जाती थी । और न चाहते हुए भी , खेती के और भैंसों के काम के खातिर , रतनसिंह नौली लाता है । कहाँ तो कह रहा था , कसमें खा रहा था , कि उसके पीछे भी नौली नहीं लायेगा , पर वह तो ऐसा मिट्टी का मरद निकला कि लछिमा की पीठ पर ही नौली ले आया । इस घटना से लछिमा टूट जाती है और सूखकर काँटा हो जाती है । रतनसिंह भी उसके सामने जाने से डरता है । रेवती से प्रेम करते हुए भी एक अपराध-भाव उसके मन में रहता है । वह कई बार मन-ही-मन में सोचता है कि इस औरत का शाप शायद उसको खा जायेगा । परंतु नौली रेवती एक बहुत ही समझदार और सयानी स्त्री है । वह लछिमा की जी-जान से सेवा करती है ।

लछिमा के सन्दर्भ में कहानी में कहा गया है — ' औरत क्या हुई , जैसे साक्षात् देवी की सुन्दर प्रतिमा ठहरी । मुंह पर सदैव एक आभा , जैसे कहीं भीतर मंदिर में का सा दीपक जलाये चलती हो । दुःख में भी दोष दूसरों पर नहीं । खुद रतनसिंह की माँ भी तो यही कहती कि — " मेरी लछिमा जैसी गांव में कोई नहीं । " ' 18ह

रतनसिंह को इस बात का डर है कि कहीं इस सती-साध्वी स्त्री की हाय उसे ले न डूबे । अतः लछिमा का जब अंतिम समय आने वाला होता है , तब वह उसके लिए बरफी लाता है , और खूब चिरौरी करके उससे पूछता है कि उसकी अंतिम इच्छा क्या है । लछिमा रेवती को बुलाकर उसे आशीर्वाद देती है , सीख देती है और अपनी बच्ची के लालन-पालन की जिम्मेदारी उसे सौंपती है । रतनसिंह को भी वह जाते-जाते निश्चिंत कर जाती है । इसका वर्णन लेखक ने इन शब्दों में किया है —

' लछिमा में एक मद्धिम-सा कम्पन हुआ और उसने कांपते हाथ से एक टुकड़ा बर्फी का उठाया । बायें हाथ से रतन-सिंह के आँसू पोंछकर और दायें से बर्फी का टुकड़ा उसके मुंह में भरते हुए , धीमेपन की हद तक धीमी आवाज़ में बाली — " तुम ... तुम शराब पीना छोड़ देना हो । " ' 19

अपने अपराध-बोध के कारण इधर रतनसिंह ने खूब शराब पीना शुरू कर दिया था । मरते-मरते लछिमा उसी लत से मुक्ति दिला जाती है । इस प्रकार अपनी अंतिम क्षणों में भी यह सती-साध्वी स्त्री अपने बेवफा पति तक का भला चाहती है और अपने सारे गिले-शिकवे एक तरफ करते हुए समूचे परिवार की कल्याण-कामना करती है ।

6– कृष्णाबाई :

"प्यास" कहानी की कृष्णाबाई वैसे तो एक भिखारिन है, परन्तु उसके भीतर "महतारी" का जो हृदय है, उसको लेखक ने भलीभाँति उकेरा है। कृष्णाबाई का पति रामचन्द्रन रेल-दुर्घटना में मर गया था। उसके बाद वह भीख माँगने वाली औरतों के एक गिरोह में शामिल हो जाती है। उस गिरोह का सरदार एक आँग्ल-भारती व्यक्ति था। उसका नाम जेकब था। जेकब दहीसर और विरार ‡ बम्बई ‡ के जंगलों में देशी दारू की भट्ठियाँ चलवाता था और उस दारू को बम्बई शहर में इन भिखारिन औरतों के माध्यम से निकालता था। कृष्णाबाई को जेकब से एक बच्चा होता है, जो बाद में मर जाता है। इसी बच्चे के कारण ही कृष्णाबाई जेकब को छोड़ देती है और उस गिरोह से भी अलग हो जाती है, क्योंकि उसे पता चल जाता है कि जेकब उसके बच्चे को जतन से दफनाने के बजाय, कहीं जंगल में फेंक आया था।

उसके बाद कृष्णाबाई स्वतंत्र रूप से भीख माँगने का काम करती है। परन्तु बच्चों वाली औरतों के मुकाबले उसे बहुत कम भीख मिलती है, अतः वह मामा पाँडुरंग को एक बच्चा ला देने के लिए कहती है। मामा पाँडुरंग ने भीख माँगने के काम को एक उद्योग में बदल दिया है। इसने इस व्यवसाय में अनेक "छोकरों" और ~~भिखा~~-भिखारिनों को भर्ती कर रखा है। मामा पाँडुरंग अनाथाश्रम से से एक बच्चा उठा लाते हैं और कृष्णाबाई से उसका सौदा करते हैं। मामा कृष्णाबाई से लड़के के सौदे के सन्दर्भ में उसके मरने की बात करता है कि ऐसी स्थिति में वह एक मुश्त में पचास रूपया लेगा। उस समय कृष्णाबाई कहती है — " अच्छा रे मामा! अपन तुमेरे को दर रोज ऊपर रूपया देने को मंजूर! मगर अभी

छोकरा जिन्दा है , अभी से ×××× अइसी बुरी बात काहे को करने का । " [20] और यही बच्चा जो उसका पेटजाया नहीं था , उसीको बचाने के लिए कृष्णाबाई रेल से कटकर मर जाती है । अतः यहाँ हम देखते हैं कि कृष्णाबाई भले भिखारिन थी , परन्तु उसके भीतर मानवीय मूल्य जिन्दा थे । उसकी चेतना अभी मरी नहीं थी ।

7- सतनारायणी :

"चील" कहानी की सतनारायणी एक गरीब मजबूर स्त्री है । उसका पति वृन्दावन बेकार था और सतनारायणी के मेहनत-मजदूरी की कमाई को शराब में उड़ा देता था , इतना ही नहीं उसे मारता-पिटता और गालियाँ देता था । फिर भी सतनारा-यणी उसे चाहती थी । वृन्दावन भी कई बार भावुकता में सत-नारायणी के पैर पकड़कर बीभत्स स्वरों में रोता था । [21]

वृन्दावन के मरने पर सतनारायणी बहुत रोती है । परन्तु अपने बच्चे रामखिलावन के कारण मन को जब्त करके लोगों के यहाँ भाँडे-बरतन का काम करती है । उसे अपनी चिन्ता नहीं है । खिलावन की चिन्ता है । खिलावन को भी छोटी-सी उम्र में जीवन के कई कटु अनुभव होते हैं , पर उसे अपनी माँ पर भरोसा है । " वह मान लेता है कि माँ मर भी जाएगी , तो भूतनी बनकर बस्ती में घूमेगी और रात के अँधेरे में चुपचाप उसके सिरहाने खाने को रख जाएगी । " [22]

मरते समय भी वह खिलावन से कहती है — " तू घबराना मत रे खिलावन ! तनिक खटिया पर से उठें , तो तेरी परपरिश तो, बेटवा , हम .... " [23] यहाँ भी हम "महतारी" के हृदय का

वात्सल्य देख सकते हैं । सतनारायणी गरीब किन्तु एक आदर्श पत्नी, बहू और माँ है ।

8– जद्दन :

"मैमूद " कहानी की जद्दन इलाहाबाद की एक मुसलमान महिला है । बूढ़ी हो चुकी है । उसने कभी अच्छे दिन भी देखे थे । परंतु अभी तो परिवार गरीबी की स्थितियों से गजर रहा है । मुसलमान मध्यवर्गीय परिवार जिसमें दिखावे की प्रवृत्ति विशेषतया मिलती है । जद्दन "मैमूद" नामक बकरे को बहुत प्यार करती है । रात-दिन उसके पीछे भागती रहती है । बातें भी अक्सर उसकी ही करती रहती है । मैमूद भी जद्दन को बहुत प्यार करता है । कहीं भी जाता हो , कितनी भी दूरी पर हो , जद्दन के पुकारते ही लौट आता है । पास-पड़ोस की औरतें अपनी बकरियों को लेकर जद्दन के पास आती है । ऐसे ही रहीमन नाम की एक औरत अपनी बकरी को फलाने के लिए जद्दन के पास आती है । जद्दन रहीमन के आगे मैमूद की बातें करती है । हिन्दी में एक कहावत है — " बड़े जाने किया , बच्चे जाने हिया । " पर बच्चे ही नहीं , मूक xxxxxxxx जानवर भी "हिया" को ही पहचानते हैं । जद्दन के बेटे की बहू शहनाज मैमूद को लाख बुलाती है , वह उसके पास नहीं जाता है । जद्दन कहती है — " लाख पौडर-इत्र छिड़के तू , मेरा मैमूद तेरे कहे पे थूक के नहीं देगा । जानवर और बच्चे तो इंसान की चमड़ी नहीं , नियत देखते हैं , नियत । " [24]

रहीमन से मैमूद की बातें कर रही है जद्दन । इस बीच में कहीं रहीमन के मुंह से निकल जाता है कि जद्दन तुम मैमूद को सवा-डेढ़ साल का बताती हो , मगर इसके रान-पुट्ठे देख के कोई तीन से नीचे का नहीं कूतेगा । बीस-पचीस सेर से कम गोश्त नहीं निक-लेगा इस बकरे में । लगता है तुमने रोटी-दाने के अलावा घास से

परवरिश की ही नहीं । " 25

हालाँकि रहीमन ने ये बातें मैमूद की तारीफ़ में ही की थी, पर ~~xxx~~ गोश्त वाली बात सुनकर जद्दन बिगड़ उठती है । मैमूद को वह अपने बेटे की भाँति चाहती है, कोई उसके गोश्त की बात करे, वह उसे बरदाश्त नहीं । वह रहीमन को डाँटते हुए कहती है — " अरी ओ रहीमन ! आग लगे तेरे मुँ में । मतलब निकल गया तेरा, तो मेरे मैमूद का गोश्त ~~xx~~ तौलने बैठ गयी ? तेरा शाविन्द तो बढ़ई है री, ये कसाइयों की घरवालियों की-सी बातें कहाँ से सीखी हो ~~xx~~ ? .... गोश्तखोरों की नज़र और कसाई की छूरी में कोई फर्क थोड़े ना होता है । अरी रहीमन, कहे देती हूँ — आगे से ऐसी बेहूदी बातें ना करना और आइंदे से अपनी बकरी कहीं दूसरी जगे ले जाना । कोई दूसरा पूरे इल्दाबाद में मेरा एक मैमूद ही थोड़े ठीका लिये बैठा है । " 26

रहीमन भी सुना देती है । " अरी जद्दन, अब बड़े घरानों की बेगमों के-से तेवर बहुत ना दिखाओ ! बकरा न हो गया तुमरा ! हातिमताई हो गया तुम्हारे~~x~~ वास्ते ! ... वो एक जो मुहावरा है, तुमने भी तो सुना होगा — बकरे की अम्माँ आखिर कब ~~x~~ तक दुआएँ करेगी ? " 27

और ~~xxx~~ रहीमन की बददुआ जल्दी ही फलती है । जद्दन के बेटे की सगाई के लिए लोग आने वाले हैं । परिवार की माली हालत अच्छी नहीं है । अतः यह तय किया जाता है कि बाहर से गोश्त लाने के बदले मैमूद से काम चलाया जाय । ~~जxxx~~ जद्दन लाख विरोध करती है, पर मैमूद को ही हलाल किया जाता है । जद्दन को ऐसा लगता है कि जैसे उसके सगे बेटे को काट दिया गया हो । जद्दन का दर्द उसके इन शब्दों में फूट पड़ता है —

" तुम बेदर्दों " से ये भी ना हुआ कि मैं अव्वल दर्जे की गोश्त-खोर औरत जब के रही हूँ कि बेटे "शहनाज , हमें गोश्त-वोश्त ना देना । " तो उसकी कोई तो वजह होगी ? और जहीर के अब्बा , इंसान दाढ़ी बढ़ा लेने से पीर नहीं हो जाता । तुम ये मुझे क्या नसीहत दोगे कि सभी बकरों के दो सींग होते हैं ? इतना तो नादीदा भी जानता है । दुनिया में तो सारे इंसान भी खुदा ने दो सींग वाले बकरों की तरह , दो हाथ- दो पांव वाले बनाये ? लेकिन औरत तो तभी रांड होती है , जब उसका अपना खसम मरता है ? " " 28

इस कहानी की विशेषता यह है कि जद्दन मैमूद नामक बकरे को बहुत चाहती है । मैमूद को वह अपना बेटा मानती है । मैमूद के कटने पर वह उसी प्रकार गम मनाती है , छाती कूटती है , जैसे कोई औरत अपने बेटे के मरने पर करती है । जद्दन की यह संवेदना उसे एक दूसरी पंक्ति में लाकर खड़ा कर देती है ।

9--कपिला :

"खरबूजा" कहानी की कपिला रूप-गुण और शील-स्वभाव में साक्षात× लक्ष्मी-समान है । लोग कहते हैं कि खिमानंद के यहाँ इन्दरलोक की परी आ गई । खिमानंद भी कपिला को बहुत चाहता था । परंतु कपिला की सगाई पहले फुलाड़ी गांव के उर्बादत्त के साथ हुई थी । उर्बादत्त पलटन में था और सन् अड़तालीस की कश्मीर-फ्रण्ट की लड़ाई के बाद अचानक गायब हो गया था । कपिला के पिता पंडित रुद्रमणि ने कुछ महीने तो राह देखी , पर फिर यह सोचकर कि उर्बादत्त कहीं लड़ाई में फौद हो गया होगा तो कपिला के कपाल पर खसम-टोकुवा का कलंक लग जायेगा , अतः खिमानंद के साथ उसका विवाह कर डाला । बाद में उर्बादत्त आया । उसने जब सुना कि कपिला की शादी तो अन्यत्र हो गई , तो उसने

अपनी छाती पिट ली और कसम खा ली कि अब किसी दूसरी के साथ वह शादी नहीं करेगा । यह बात उड़ती-उड़ती खिमानंद के गांव पत्थरखाणी तक आती है और लोग यह कहना शुरू कर देते हैं कि जब उर्बादत्त यह कह रहा है तो उन दोनों में बहुत गहरा प्यार होना चाहिए , अन्यथा ऐसे कौन किसके लिए अविवाहित रह सकता है । इस बात के कारण खिमानंद के दिल में भी दरार पड़ जाती है और वह निर्दोष कपिला को शंका की दृष्टि से देखने लगता है । कई बार देर-देर रात तक क~~xxxxx~~ कपिला को उलटे-सीधे सवाल पूछता रहता है ।

ऐसे में गांव में एक घटना होती है । खिमानंद का एक चचेरा भाई था सदानंद । उसकी ब्याहता मर गई , तो वह दो-घरिया नंदी पंडितानी को ले आया था । नंदी की सास चन्दरैणी काकी नंदी को नफरत करती है , अतः उन्होंने गांव में एक बात उड़ा दी कि नंदी चतुर्भोज के हरिया लोहार के साथ हेल-मेल बढ़ा रही है । लोगों ने कहना शुरू किया — " अरे यारो , ब्याहता होती तो भरोसा भी होता । औरत की जात ने जहाँ एक बेर ईमान खोया तो खोया । पातर स्वभाव की औरतें कोई ऊँच-नीच थोड़े ही देखती हैं । " 29

इस बात को लेकर सदानंद नंदी को घर से निकाल बाहर करता है , तब खिमानंद उसे समझाने जाता है । सदानंद तिलमिलाया हुआ तो था । वह उर्बादत्त वाली बात को लेकर व्यंग्य कसता है । अतः सदानंद की तरह खिमानंद भी कसम खा लेता है कि घर में या तो कपिला नहीं या वह नहीं । खिमानंद की मां अपनी बहू को बहुत चाहती थी । वह खिमानंद को ही आड़े हाथों लेती है , पर खिमानंद टस से मस नहीं होता । कपिला की सास बहुत रोती है , तब कपिला अपनी सास को समझाती है — " आप असमंजस में

हैं, मैं जानती हूं, सासू। टेकनेवाले के टूटने से तो छड़ी का टूटना ही भला होता है, ज्यू, पुरुष जात की कसम है, टूटेगी नहीं।... सो मेरा ही जाना भला है, ज्यू। परलोक में पाप किए होंगे, पितरों की सेवा नहीं की होंगी, आज दण्ड भोग रही हूं। कोई पुण्य किया होगा, भाग में आपके चरणों की सेवा का सुख लिखा होगा, तो किसी दिन उनका भरम दूर हो जाएगा। लौट आऊंगी।" 30

कपिला की सास कपिला को कितना चाहती थी, यह तो उनके निम्नलिखित xxxx कथन से ही प्रमाणित होता है —

" मेरे घर का तो पुण्य ही रीत गया है। चुपड़े-ससेरे गास-टुकड़े खाती थी। आंगन में बैठी धूप सेंकती थी। ऐसी परहोश सोती थी, रात खुलने की खबर नहीं लगती थी। मैं तो इतना सुख पाती थी xxx, फिर भी, फसल बटोरी हुई हो दिखाई देती थी।... अब हाड़-गोड़ों का तेल निकल जाता है, मगर काम नहीं निबटते। वह निर्मोही भी मुख मुख मसान जाती बुढ़िया के हाड़-गोड़ों को अलसा गई और अपनी दीठ फेर ले गई। हे राम। साक्षात् सरस्वती जैसी, लक्ष्मी को घर से निकालने का दण्ड मैं भी भोग रही हूं। कहां छोरी नोनी मैं चुपड़े हुए हाथ लगाती थी, तो देह की सुध नहीं रहती थी मुझे। अब तो खांसते-खांसते प्राण बाहर को निकलने लगते हैं, मगर कोई पीठ पसारने वाला भी नहीं है।" 31

खिमानंद भी घर के कामों के मारे तंग आ गया था। अतः मां से कहता है कि ऐसा है तो वह दूसरी लाने को तैयार है। इस बात पर हिंमानंद की मां उसे बुरी तरह से फटकार देती है कि दूसरी को लाने से पहले उसे अपनी मां की अर्थी उठानी होगी। यहां एक बात ध्यातव्य है कि कपिला की इतनी तारीफ कोई और नहीं,

स्वयं उसकी सास कर रही है । और जब सास कर रही है, तो इतना तो तय समझना चाहिए कि उस स्त्री में कुछ तो होगा ही । दूसरे यह भी एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि वही स्त्री अपनी सास को माँ की जगह मानती है, उसकी तन-मन से सेवा करती है, जो अपने पति को भी खूब चाहती हो और जो उससे पूर्णतया संतुष्ट रहती हो ।

मधुआइन हो गई नंदी एक बार गाँव आती है और सदानंद को मिलती है । अब तक सदानंद की सारी हेकड़ी समाप्त हो गई थी, अतः वह नंदी को पुनः रख लेता है । तब उस खरबूजे को देखकर खिमानंद-रूपी खरबूजा भी अपना रंग बदलता है और कपिला को वापस बुला लाता है । खिमानंद फिर कपिला के पीछे-पीछे घूमने लगता है, तब एक बार कपिला को ही टोकना पड़ता है —

" हँ हो, इतना मोह भी ठीक नहीं होता । एक बेटे के बाप बन गए हो । अब तो यों छाया की तरह पीछे-पीछे चलना छोड़ दो । "[32] इस प्रकार हम देखते हैं कि कपिला एक सीधी-सादी, पतिव्रता, सेवाभावी, ममतामयी, वात्सल्य-मूर्ति स्त्री है । रूप के साथ गुणों का मेल दुर्लभ ही होता है । यहाँ वह मणि-कांचन योग हुआ है । खिमानंद के लिए वह रम्भा भी है, माता भी, वयस्या भी । लक्ष्मी और सरस्वती, चंचला और थिरा का मेल ।

10- सावित्री :

"गृहस्थी" कहानी की सावित्री एक मिरासिन होते हुए भी उसके संस्कार बहुत ऊँचे हैं । उसकी माँ कलावती उसे एक मिरासिन की तरह रहने के संस्कार देती है कि पुरुष जाति को

कैसे वश में किया जाता है, "हरामजादी" पुरुषों की जात किन-किन बातों पर खुश होती है और इनको कैसे दुहा जाता है, कैसे निचोड़ा जाता है, कोई चीज खरीदनी हो तो पुरुष के आगे कैसे नखरे करने चाहिए आदि आदि ।

पर सावित्री कुछ दूसरी ही मिट्टी की बनी हुई है । वह बलभद्र ठाकुर को मन से चाहती है । और उसमें भले घर की लड़कियों की तरह घर-गृहस्थी बसाने की हौंश है । बलभद्र की पहली घरवाली का देहान्त हो गया है । उससे उसे एक बेटा भी है, जो अभी ननिहाल में अपनी नानी के पास पल रहा है ।

मेला आ रहा है । मेले में ठाकुर आने वाला है । अतः सावित्री की मां उसे पूरा मिरासिनों का शास्त्र पढ़ा देती है कि कैसे उसे इन दो-चार दिनों में जितना हो सके निचोड़ लिया जाय । सावित्री मेले में ठाकुर के साथ जाती भी है, पर मां की बातों का उस पर कोई असर नहीं है । वह तो ठाकुर के साथ घर बसाने का सपना देख रही है, इतना ही नहीं ठाकुर के बच्चे को मां का सच्चा प्यार देना, यह भी उसका एक संकल्प है । कहानी के अन्त में वह ठाकुर से कहती है —

"अब पूरे तीन दिनों तक मेला चलता रहता है, तो क्या यह जरूरी है कि हम भी यहाँ पड़े रहें ? कितना रूपया आलतू-फालतू चीजों में खर्च हो जाता है यहां ? उठो, वापस चलने की तैयारी करो । मैं तुम्हारे कपड़े तह कर रख देती हूं । " 33

इसके साथ वह यह भी कहती है कि वह पहली वाली दीदी का मुन्ना कब तक ननिहाल में पड़ा रहेगा, बेचारा मां की ममता को तरसता होगा वहाँ ... " 34

11- गोपुली गफूरन :

"गोपुली गफूरन" कहानी की गोपुली गफूरन एक विशिष्ट नारी-चरित्र है । इस कहानी के "थीम" को लेकर लेखक ने अलग से एक उपन्यास की भी रचना की है । गोपुली का व्यक्तित्व अद्भुत है । उस पर वह ऐसे सजती-संवरती है कि अलमोड़ा शहर के की पथरौटी सड़कों पर चलती है तो लोगों को इन्दर के दरबार से छूटी हुई अप्सरा जैसी दिखाई पड़ती है । [35]

गोपुली देवराम शिल्पकार की घरवाली है । शिल्पकार छोटी जाति मानी जाती है, दूसरे देवराम का वास्ता जिन लोगों से वे गोपुली के साथ ओछी-नीची बातें करना अपना अधिकार समझते हैं । देवराम भी ऐसी छोटी-मोटी हरकतों पर ध्यान नहीं देता । गल्ले की दुकान वाला भोपाल शा गोपुली के सन्दर्भ में कहता है — "कुत्ते के नीचे का क्पास का गद्दा इसीको कहते हैं । " [36] खीमसिंह होटलवाला कहता है — " गजगामनी , मिरगलोचनी , चन्द्रमुखी , मनमोहिनी । " [37] इस पर किरपाल गुरु खिमसिंह को कहते हैं कि "गजगामिनी" नहीं "गजगामिनी" होता है, तब खीमसिंह गन्दा मजाक करते हुए कहता है — " ऐसी मस्त तिरिया को गज के अलावा और गाभन भी कौन बना सकता है । " [38]

अपने इस अनोखे व्यक्तित्व के कारण गोपुली "टाक आफ द टाउन " बनी हुई थी । उसके चाहने वालों में प्रोफेसर तिवारी , भोपाल शा , खीमसिंह होटलवाला , किरपालदत्त पुरोहित , सुरती-तम्बाकू का व्यापारी अदलूमियाँ , थिस्सन पनवाड़ी आदि थे । सभी गोपुली पर लट्टू थे । गोपुली को इनकी बातें शुरू-शुरू में तो अच्छी नहीं लगती थी , पर बाद में वह इन बातों में रस लेने लगती है , बल्कि उसे इसका एक नशा-सा हो जाता है । पर ये संबंध हंसी-मजाक और जरा-सरा छू लेने तक सीमित थे । गोपुली बड़े चातुर्य से इन सबसे

निबाह किए जा रही थी ।

इन सबसे गोपुली-देवराम के कुछ-न-कुछ स्वार्थ सधते थे । भोपाल शा के यहाँ देवराम की गल्ले की उधारी चलती थी । किर-पाल दत्त पुरोहित अपने जजमानों को ताँबे का कलश देवराम के यहाँ से ही खरीदने की सलाह देते थे । खीमसिंह होटलवाला "हाफ चार्ज" में गोपुली को गरम-गरम शिकार-भटुवा खिलाता था । अदलूमियाँ से वह तम्बाखू लेती थी । धिस्सन मुफ्त में बढ़िया पान खिलाता था ।

परन्तु ये सब चहल-पहल और रौनक देवराम के जीते जी रहती है । देवराम की अकाल मृत्यु गोपुली के जीवन को ग्रहण लगा देती है । सगे-रिश्तेदार सब खिसक जाते हैं । मौज-मस्ती वालों से संसार नहीं चलाया जाता । अतः विवश होकर अपने बच्चों को पालने के लिए "गोपुली शिल्पकारनी" को "गोपुली गफूरन" बनना पड़ता है । अहमदअली फलवाले के घर बैठकर गोपुली "गफूरन" बन जाती है । अहमदअली उसके बेटों हरराम-नरराम को खतना करवाके "हसरत अली" "नसरत अली" बना देता है ।[39]

गोपुली "गफूरन" तो बन जाती है, पर उसकी ज़िन्दगी का सारा चार्म खत्म हो जाता है । गोपुली के भीतर बैठी माँ उससे यह सब करवाती है । खूब सजने-सँवरने वाली और मस्त हथिनी की तरह डोलने वाली गोपुली को अब बुरखा पहनकर निकलना पड़ता है ।

<u>12- रुक्मा सूबेदारनी :</u>

"अर्द्धांगिनी" कहानी की रुक्मा ~~सूबेद~~ सूबेदारनी भी एक विशिष्ट नारी-चरित्र है । शादी को पन्द्रह साल हो गए हैं, परन्तु "वन की हिरनी का-सा चौंकना अभी नहीं गया ।"[40]

सूबेदार नैनसिंह और रुक्मा सूबेदारनी आदर्श पति-पत्नी हैं । जब बहुत दिनों के बाद सूबेदार लौटते हैं तो उन्हें हर आती-जाती , खेतों में काम करती स्त्री में सूबेदारनी की छाया दिखती है । सूबेदार सोचते हैं — " स्त्रीत्व भी क्या चीज हुआ । सारे ब्रह्मांड में व्याप्त ठहरा । कोई और -छोर थोड़े हुआ इनकी ममता का । अपरंपार रचना हुई । नाना रूप , नाना खेल । " [41]

सूबेदार नैनसिंह सूबेदारनी को कितना चाहते हैं , उसकी अभिव्यक्ति इन ~~अंक~~ पंक्तियों में हुई है —

" स्त्री डे एण्ड स्त्री नाइट — माय डियर सूबेदारनी , यू वाज इन माय ड्रीम । " [42] पहाड़ के जो युवान आर्मी में होते हैं , वे जब अपने घर आते हैं , तब कई बार अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं । इसमें उनकी मासूमियत तथा प्रेम दोनों झलकते हैं ।

सूबेदार आर्मी में है , अतः जितने दिन घर पर होते हैं , पलक झपकते बीत जाते हैं और बाकी के दिनों में सूबेदारनी निरन्तर एक भय के ओथार में जीती है । लगातार एक मृत्यु-भय उसे घेरे रहता है । यथा — " इसी वर्ष जुलाई में गांव के तीन घरों में तार आये । सुना , उधर अमृतसर में कोई लड़ाई हो गयी... एक साया फौजियों के घर मंडराता फिरता रहा है महीने-भर । " [43]

13- शिवरत्ती :

"महाभोज" की शिवरत्ती इलाहाबाद के ममफोर्डगंज की गरीब बस्ती की एक अनपढ़ स्त्री है । मगर उसका जीवट और जुझारूपन देखने लायक है । चैतीराम — उसका पति — बेकार बैठा है । घर-गृहस्थी का सारा बोझ शिवरत्ती पर है । चार

बच्चे हैं, और अब पांचवें से है, फिर भी गृहस्थी की गाड़ी खींचे जा रही है और उफ तक नहीं कहती । उसकी हया, लाज-शरम और भलमनसाहत के कारण चैतीराम एक अपराध-बोध से पीड़ित रहता है । चैतीराम की जातीय इच्छा अधिक प्रबल है, अतः वह शिवरत्ती को पास बुलाना चाहता है, परन्तु शिवरत्ती उसे फटकार देती है । इस पर चैतीराम शराब की दुकान वाले ब×बू×र×म×क×× बाबूलाल को कहता है —

" यार बाबू भाय, अगर जो होती ससुरी बिरादरी-वालियों में से भतेरों-सी जबानदार और लड़ाकू, तो सच्ची कैता हूं डियर, यों डालता हरामजादी के झोंटें में हाथ और गेर के जमीन परको, दो देता जूतड़ों पे कि ये "नखरे किसी ससुरे नामरद को दिखाना । चैतीराम से तो कभी अपने बाप की भी बर्दाश्त ना हुई । " मगर मैं तो मारा हुआ हूं उस हयादार की भलमनसाहतों का -- और, यार, जूतों का मारा हुआ सिर उठा सकता है, भलमनसाहत का मारा नहीं । " 44

चैतीराम की जातीय इच्छा बहुत उबाल मारती है । वह शिवरत्ती से कहता है — "शिब्बो, तीन-चार रातों का जागरन हो लिया । जी बहुत बैरागी और दुःखी हो गया । कुछ पैसे-धेले देती तो जरा सलीमो को हो लेता । " 45

यहां चैतीराम मीरगंज किसी वेश्या के पास जाने की बात करता है, पर फिर भी वह उसे तीन रूपये देती है । जब हो लिया मीरगंज, तो चैतीराम की आत्मा उसे धिक्कारती है --

" चैतीराम, डूब मर । ससुरे घरवाली ने जो तीन तुलसी के पत्ते रख दिए थे तेरी हथेली पे, तू उन्हें पिशाब घर में

छोड़ आया ? ... बस्स कल की आखिरी दफा की है डियर । तेरी कसम खा के कैता हूं , कल से जो दुसरा उस तरफ का रुख भी करे . उसकी .... " 46

चेतीराम के पिता की मृत्यु पर चेतीराम कहता है कि गुड़ की डली बंटवाकर मिट्टी को बिदा कर देंगे । बिरादरी के नेग निभाना शिवरत्ती के लिए मुश्किल होगा । वह पहाड़ उससे न उठेगा । तब शिवरत्ती कहती है — " मोती के बापू , बाप के मरने का रोना सभी मरदों को शोभा देता हैगा , तुम्हारा ये जोरू के आगे का रोना मुझसे [illegible] बर्दाश्त न होगा । अरे बेवकूफ , मैं कोई किसी राह चलते की बेसवा हूं , या तुम्हारी घरवाली ? जिस बहुरिया से अपनी घर-गिरस्ती ही न सधी , उसका तो मीरगंज में जा बैठना भला । " 47

पचास तोले चाँदी की करधनी बेचकर शिवरत्ती अपने ससुर का कारज निबटाती है । बिरादरी के लोग खा-पीके चले जाते हैं । चेतीराम भी नींद में लुढ़क गया है । बच्चे भी सो गए हैं । " सिर्फ शिवरत्ती की अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ और भविष्य की चिन्ताओं से बोझिल आंखों में नींद की कोई प्रतीति ही नहीं हो पा रही । अगले महीने तक मैं पांचवां हो जायेगा , तो कुछ दिनों काम भी नहीं सध पाएगा । यों भी अभी से पसलियों और कमर में दर्द रहने लगा है । कभी-कभार मूर्च्छना-सी भी चांप लेती है देह को और आँखें धुंधली पड़ जाती हैं । " 48

## 14- शकुन्तला घाटन :

"इब्बू मलंग " कहानी की शकुन्तला घाटन एक मराठी बाई है । उसका पति माधोराव लोकल ट्रेन से कटकर मर गया है । वह माहीम-दादर तक लोगों के घरों में जूठे बरतन

घिसने जाती है । जब माधोराव मरा तब शकुन्तलाबाई को दो महीने चढ़े हुए थे । इधर छः महीनों से मेहनत-मजदूरी करके वह अपने बच्चों का पेट पाल रही है । उसे इस बात की चिन्ता है कि जब उसे बच्चा होगा , तब कुछ समय वह काम पर नहीं जा सकेगी और तब उसके कुछx बच्चों का क्या होगा । उसने कुछ तेइस रूपये अपने बच्चों के वास्ते बचाकर रखे थे । सुलतानी भंगन तथा नागप्पा के लोगों से उसने सुना था कि इब्बू मलंग आँकड़ा देते हैं , अतः जिन्दगी भर माधोराव को सट्टे से बरजने वाली शकुन्तलाxx शकुन्तला अपने बच्चों की खातिर इब्बू मलंग के पास जाती है । चरस-अफीम के नशे में इब्बू मलंग शकुन्तला को देखकर अपनी लुंगी उठा लेता है । शकुन्तला इसे आँकड़े का संकेत समझती है । सुलतानी भंगन ने उसे यही कहा था । अतः वह बेचारी तेईस में से पूरे बीस रूपये इक्के-से-दुग्गी और दुग्गी-से-इक्के पर लगा आयी थी । आँकड़ा लगाने से लेकर आँकड़ा खुलने तक वह कई बार हिसाब लगाती है । अपने उत्साह को छिपाना उसके लिए कठिन हो रहा है । मज़ार पर चादर चढ़ाने से लेकर मलंग शा की लुंगी लेने तक के विचार उसे आते रहते हैं । "ओपन" के आँकड़े में "दुग्गी" आ चुकी है , और अब उसे "क्लोजिंग" के आँकड़े "इक्के" की प्रतीक्षा है , परन्तु शकुन्तलाबाई के दुर्भाग्य से " दुग्गी से सत्ते " का आँकड़ा खुलता है ।[49]

तब इब्बू मलंग को शकुन्तला बुरी-से-बुरी गालियाँ देती है । जिस इब्बू मलंग से दुनिया डरती है और उसकी कृपा पाने के लिए तरह-तरह से उसका जतन करती है , उसे शकुन्तला बुरी तरह से लताड़ती है । उसे कुत्ता , हरामजादा और न जाने क्या-क्या कहती है । जब वहाँ का दादा शकुन्तला को मार भगाने की चेष्टा करता है , तब इब्बू मलंग कहता है — " यह बेचारी महतारी ठीक कहती है कि मैं मलंग नहीं चोर-लबार और मक्कार हूँ । ...

और तू भी पक्का बदमाश और जालसाज है मादर ... " 50

इस प्रकार शकुन्तलाबाई के रूप में लेखक ने एक माँ के दुःख-दर्द , उसकी संवेदना और उसके पुण्य-प्रताप को यथार्थ रूप में चित्रित किया है ।

सूबेदारनीxxxx

15- सूबेदारनी :

"शरीफों का मुहल्ला " कहानी की सूबेदारनी एक जीवट-वाली , बहादुर और दिलेर औरत है । सूबेदार लड़ाई में मारा गया है । अतः सरकार की ओर से उन्हें राशन की दूकान का लायसंस मिल जाता है ।xबxमxxx परिवार में सूबेदार के दो भाई हैं , सूबेदार के बच्चे हैं , जिनमें से एक बच्ची सुजाता स्कूल जाती है । सूबेदार की छोटी बहन कमला है , जो काफी खूबसूरत है । परन्तु जिस मकान में ये लोग रहने आए हैं , और जहाँ ये दुकान खोली गई है , उस पर गैर-कानूनी तरीके से नाटे गुरु का कब्जा है । कोई वहाँ आने की हिम्मत नहीं करता है । नाटे गुरु के बड़े भाई राधेश्याम यादव उर्फ रुक्मन ने चंद भैंसों और चन्द उचक्कों के साथ इलाहाबाद के इस भैलुपुर मुहल्ले में अपना रुतबा बढ़ाना शुरू किया था , और " सिर्फ दस-बारह साल में म्यूनिसिपल कार्पोरेटर से शुरू करके एसेम्बली तक पहुंच गए थे । मंत्री बनाये जाने वाले थे कि एक कार-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गयी और उस समय के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक ने अपने-अपने शोक-संदेश भेजे थे । ... छोटे भाई कामता बाबू भेxx उर्फ नाटे गुरु ने रुक्मन की परंपरा को आगे नहीं बढ़ाया , तो इसमें दरार भी नहीं आने दी और अपना दबदबा हमेशा ऐसा रखा कि इनके नाटे कद को नजरअन्दाज करके भैलुपुर मुहल्ले में कोई सामाजिक - सार्वजनिक किस्म का उत्सव या आयोजन हुआ हो , ऐसा

कभी देखने में आया नहीं । " 51

नाटे गुरु ने राधे काछी , श्यामलाल जैसे कुछ लड़ाकू किस्म के गुण्डों को पाल रखा था और उनके बल पर पूरे मुहल्ले में आतंक मचा रखा था । और अब नाटे गुरु की रजामंदी के बिना इस सूबेदार परिवार ने मकान पर अपना कब्जा कर लिया था । सूबेदारनी के चेहरे पर किसी प्रकार का डर याखोफ नहीं था । लोग सोचते थे कि किसी दिन अनहोनी होगी और छोटे भाई की राख बहाने के बाद ही ये लोग मकान खाली करेंगे ।

एक दिन पानी भरने के बहाने ये लोग जान-बूझकर झगड़ा करते हैं । सूबेदारनी का देवर हरलाल कुछ कहता है कि श्यामलाल , दीना , राधे आदि छः-सात लोग उस पर टूट पड़ते हैं । कमला और सुजाता चिल्लाती हैं कि "भइया को बचाओ " "कक्का को बचाओ" । तब मंजला भाई शिवलाल लाठी लेकर कूद पड़ता है और दोनों भाई मिलकर उन पेशेवर गुण्डों के छक्के छुड़ा देते हैं ।

तब मुहल्ले का एक आदमी टिप्पणी करता है — "साहब , मुहल्ले वालों पर फौजी गुण्डों का कब्जा हो गया है । अब शरीफ लोगों की दर-गुजर इस मुहल्ले में बहुत मुश्किल है । " 52

यह मुहल्ला कितना शरीफों का मुहल्ला है , उसका प्रमाण भी कहानी में ही मिलता है । एक बार पेन्शनयाफ्ता सक्सेना बाबू मैxxxxxxxxxx की लड़की को श्यामलाल छेड़ता है , उस पर सक्सेना बाबू उसे जब कुछ कहते हैं , तब "बेंत से पास खड़ी श्रीमती सक्सेना की जांघों से छुआते हुए कह दिया था —' अब तुम्हारी बीबी को तुम्हारे सामने छेड़ रहा हूँ , बोलो , क्या करने का इरादा है ?' " 53

ऐसे "शरीफों के मुहल्ले में " , छोटे बच्चे , छोटी बच्ची , खूबसूरत ननद के साथ रहने का कलेजा सूबेदारनी जैसी कोई फौजी की औरत ही रख सकती है । यहाँ सूबेदारनी एक वीरांगना नारी प्रतीत होती है ।

16- बिन्दा :

"अहिंसा" कहानी की बिन्दा भी मटियानीजी के नारी-पात्रों में एक अविस्मरणीय नारी-पात्र है । यह एक सीधी , सहज सरल औरत है । खूब सेवाभावी , खूब बच्चों और पति को प्रेम करने वाली । इन सबके लिए वह रात-दिन खटती रहती है । रात-दिन गृहस्थी के कामों में लगी रहने वाली यह औरत अब चलने-फिरने के लिए भी मोहताज हो गई है । जगेसर उसका पति है । वह उसे शहर ले आया है , इलाज के लिए । मरणांतक यातना के बीच भी बिन्दा को अपने घर की ,, अपनी गृहस्थी की चिन्ता है । शहर आते समय वह कहती है — "जिनावरों को ठीक से रखना । हम जल्दी ही वापस लौटूंगी । " 54

बरसों पहले जगेसर को हैजा हो गया था । बाद में मियादी बुखार ने उसे तोड़कर रख दिया था । तब टट्टी-पिशाब भी बिन्दा करवाती थी । छोटे बच्चों की-सी सफाई भी वही करती थी । दुर्गन्ध इतनी आती थी कि खुद जगेसर को उबकाई आने लगती थी । जगेसर इसे दूर हटने को कहता कि कहीं उसे भी हैजा न हो जाये । पर तब ये औरत अपने नाक तक को भूल गई थी ।

जगेसर भी उसे खूब चाहता है । वह सोचता है — "इस देवी-सरूप औरत के इलाज में कोई कसर न छूटे । साढ़े चार सौ तो साथ लेकर चला है । अभी और बन्दोबस्त करना पड़े तो

छिपकना नहीं है । यह वक्त न तो पैसे का मुख देखने का है , न अपनी तकलीफ और फजीहतों से बेसब्र होने का । यह तो रोम-रोम से एक ही प्रार्थना का वक्त है -- ' हे परमेसर -- ' . 55

जो जगेसर बिन्दा के रहते कामचोर हो गया था , वह शहर में जगह-जगह डोल रहा है । खाटों की बुनाई कर रहा है । उसे बस इतना मालूम है । बिन्दा 'सीरियस' है और उसका इलाज कराना है । वह तीन-चार हजार रुपयों का बन्दोबस्त भी करता है । लोगों के कहने पर डा. गुदौलिया को पेशगी रकम भी पहुँचा आता है । पर हड़ताल की वजह से आपरेशन नहीं हो पाता । बिन्दा दम तोड़ देती है । जगेसर सुन्न हो जाता है । कुछ दिनों के बाद पुनः शहर आता है । डा. गुदौलिया को मिलता है । गुदौलिया पहले तो पहचानता ही नहीं है , फिर जगेसर के बताने पर कहता है -- " ओ , दैट सुमन " । रुपयों वाली बात को चुपचाप गटक जाता है । तब जगेसर को डाक्टर से इतनी वितृष्णा होती है कि वह न आव देखता है न ताव और अपना वसूला डाक्टर के सिर पर दे मारता है । जगेसर सोचता है कि गुदौलिया जैसे नर-पिशाचों को मारने में हिंसा नहीं अहिंसा है ।

17- गंगाबाई :

"दैट माय फादर बालजी " कहानी की गंगाबाई वैसे तो एक मराठा घाटन औरत है , पर अपने बच्चे के भविष्य के लिए , उसे उसका वास्तविक हक दिलाने के लिए , अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है और पागल हो जाती है । यह गंगाबाई गांव धिंगरी , तालुका रैनी और जिला सतारा की रहने वाली है । बम्बई में स्टाक-एक्सचेन्ज के बिल्डिंग के नीचे पहले केले मौसम्भी बेचती रहती थी । सुन्दर और जवान थी ।

इतनी सुन्दर कि कई लोग उसे फिल्म-स्टार शान्ता आपटे की बहन समझते थे । बम्बई के बालजी सेठ की आँखों में वह समा जाती है । बालजी सेठ खार में बंगला दिलाकर उसे रखते हैं । और जब उसे बच्चा रह जाता है , तब उसे बालजी सेठ निकाल बाहर करते हैं । गंगाबाई कह देती है -- " जेव्हाँ पर्यन्त मला माझ्या-माझ्या मुलगाचा हक्क नाहीं मिळेल , तेव्हाँ पर्यन्त मी तुमचा आश्रय सोडणार नाहीं .... " 56

और एक दिन बालजी सेठ गंगाबाई और लल्लन को अपनी इकसठवीं वर्ष-गाँठ पर एक पार्टी में निमंत्रित करता है । उस दिन कुछ ऐसा घटित होता है कि लल्लन और गंगाबाई दोनों विक्षिप्त हो जाते हैं । लल्लन पागलों की तरह घूमता रहता है और गंगाबाई फ्लौरा फाउण्टन के पास भीख माँगने लगती है ।

18- नसीम :

" एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " की नसीम एक वेश्या है । परन्तु उसमें जो उच्च मानवीय भाव एवं मानवीय मूल्य हैं वे उसे विशिष्टता प्रदान करते हैं । उसकी माँ यू.पी. के बस्ती जिले की थी , और यदि उसकी बातों पर यकीन किया जाय तो नसीम जम्मू दादा की औलाद थी । नसीम को तीन दिनों से खाना नसीब नहीं हुआ है । जम्मू दादा उसे अपने साथ चलने को कहते हैं । शहेनशाह होटल में उसे बिरयानी-कोफ्ता खिलाने की बात करता है । पर नसीम को उसकी माँ ने बताया था कि जम्मू उसका बाप है । अतः बाप के साथ वह कैसे धंधा कर सकती है । ऐसेमेंरामन्ना उसे मिल जाता है । रामन्ना भी नसीम को चाहता है । पर उस दिन उसके पास केवल दुअन्नी थी । नसीम चाहती तो वह दुअन्नी रख लेती । पर वह उसी दुअन्नी से चाय और खारी बिस्किट मंगवाती है और रामन्ना को भी

खिलाती है । उसके बाद नसीम उसे प्यार करने के लिए एक पाईप में ले जाती है । रामन्ना के हाथ में नसीम का नाड़ा आता है, और वह ऐसे चौंकता है, जैसे किसी साँप ने छू लिया हो । नसीम के नाड़े में पांच कानिये पैसे बंधे हुए थे । रामन्ना की बहन करावा भी इसी प्रकार नाड़े में कानिये पैसे बाँधती थी । पेट की भूख के लिए वह भी शरीर का सौदा करती थी । एक दिन रामन्ना के साथ उसकी झड़प हो जाती है । तब वह रामन्ना को भला-बुरा कहती है, और फिर ट्रेन से कटकर मर जाती है । नसीम के नाड़े के पैसों से उसे अपनी बहन करावा याद आ जाती है, और वह नसीम को अपनी बहन बना लेता है ।

19- "कालिका-अवतार" कहानी की ठकुरानी :

सिलगढ़ी गांव के प्रधान रनबहादुरसिंह का इकलौता बेटा क्यांकुरी जंगल में बकरियाँ चराने गया था । वहाँ उसका पैर फिसला और तालाब में गिरा । तालाब के किनारे पत्थर पड़े थे । उसका सिर टकरा गया । पूरे दो घण्टे बेहोश पड़ा रहा । बाद में घर लाये । उसके बाद उसका कोई उपचार करवाना चाहिए । पर गांव के लोगों ने कहा कि उसे तो "देव पकड़" हो गई है । अतः बैतड़ी गांव से शंकर धामी को बुलाया जाता है । बैतड़ी ठकुरानी का पिहर का गांव था । शंकर धामी उसे "चुड़ैल-पकड़" बताता है । चुड़ैल भगाने के बहाने वह नन्हे करनबहादुर पर अनेक जुल्म ढाता है, और अन्ततः उसे मार डालता है । अब तक तो ठकुरानी भी अंध-बिवश्वx विश्वास पर चल रही थी और लागों की बातों को सच्चा मान रही थी । परन्तु जब करनबहादुर मर जाता है, तब अचानक उसे अपने विगत जीवन की एक बात याद आती है । शंकर धामी उसका चचेरा भाई था । भाई होते हुए भी एक बार वह उसकी इज्जत लुटना चाहता था । तब उसके मुंह पर थूक कर

तथा उसे "कुत्ता" कहते हुए वह भाग खड़ी हुई थी । तब शंकर धामी ने भागती हुई ठकुरानी को कहा था — " कुत्ता कहा है, तूने ? तसुरी कभी काटूंगा जरूर ! " 57

ठकुरानी समझ जाती है कि आज उस कुत्ते ने काट लिया । परन्तु वह भी ठकुरानी है । वह शंकर धामी के डगरिया देवदास उपन्याठीराम को बुलाती है । उसे सारी बात समझाती है । उसके बाद "देव-पकड़" का ढोंग रचाती है । पुनः शंकर धामी को ही बुलाया जाता है । मौका पाकर ठकुरानी शंकर धामी पर ऐसे झपट्टा मारती है और उसका गला दबोच देती है कि उसके प्राण उड़ जाते हैं । देवदास उपन्याठीराम घोषणा करता है — " सुनो, सुनो, हे सिलगढ़ी गांव के निवासियो ! भाग जगे हैं, गांव सिलगढ़ी के ! ठकुरानी साहिबा में जै मैया जगदम्बा कालिका ने अवतार लिया है । ... शंकर धामी ने चुड़ैल कहकर, मैया कालिका का अपमान किया था — जै मैया जगदम्बा ने, भैंसासुर मरदनी खप्पर त्रिशूल धारिणी ने उसे उसके पापों और घमण्ड की सजा दी है, बोलो, मैया जगदम्बा कालिका की .... " 58

और इस प्रकार ठकुरानी अपने पुत्र की हत्या का बदला ठीक उसी प्रकार लेती है, जिस प्रकार शंकर धामी ने अंध-विश्वास की छाया में करन को मार डाला था । इस कहानी से यह भी प्रमाणित होता है कि जब किसी मां से उसका बेटा छीना जाता है, तब वह सचमुच में कालिका बन जाती है ।

20- "पत्थर" कहानी की गफ़रन :

गफ़रन एक मजहब-परस्त औरत है । वह अपने खाविन्द को ही खुदा समझती है । उसका शौहर रमजानी एक कामचोर और निखट्टू आदमी है । पर गफ़रन दिन-रात मेहनत-मजदूरी

करके रमजानी के सारे शौक पूरे करती है । उसे मटन-बिरयानी खिलाती है । पर एक दिन अहमदिया टोंचा मार देता है — "अबे , बीबी के बेटा पैदा करना कोई पान चबाकर थूक देना नहीं है । यह काम मरदों का है । खैर , तू क्या मरदों के उसूलों को समझेगा । " 59

रमजानी को यह बात लग जाती है और वह गफूरन से कहता है — " कुरबान जाऊं तेरी हर अदा-सदा पर , मेरी बेगम मुहल्लेवालों को हैया हो जाए , नाक पर उस्तरा फिरा रहे हैं , बस , मेरी जान एक बेटा जो तू दे दे ... " 60

पर यह शौक रमजानी को भारी पड़ता है । गफूरन अब मेहनत के काबिल न रही । मटनबिरयानी की जगह दाल-रोटी के लाले पड़ने लगे । नौटाँक – अद्धा नसीब होना तो दूर ,बीड़ियाँ भी मयस्सर न हो रही थी । रमजानी अब अहमदिया को बददुआ देने लगा कि ससुरे ने खामखाह आसमान पर चढ़ा दिया । बेटा हुआ , पर उसकी कोई खुशी रमजानी को न थी । अतः रमजानी ने उसका नाम रख दिया पत्थर । बाद में रमजानी गफूरन को बच्चे को लेकर भीख मांगने की बात कहता है । इतने बड़े बम्बई शहर में कौन देखने वाला है । गफूरन मेहनत-मजदूरी तो कर सकती है , पर भीख माँगना उसे अच्छा नहीं लगता । पर अपने शौहर रमजानी के खातिर वह अपने जमीर पर पत्थर रखकर वह काम भी कबूल कर लेती है । पर भीख माँगना भी हुनर है । सीधी-सादी गफूरन से यह काम कैसे सध सकता है । तब एक दिन रमजानी कहता है — " खुदा के बन्दे कहाँ रह गए हैं बेगम ? ... खामोश बच्चे को तो माँ भी दूध नहीं पिलाती है । कहती , कि इस बच्चे का बाप मर गया है ? " 61

इस पर गफूरन न आव देखती है न ताव और एक तमाचा

रमजानी के मुँह पर झड़ देती है ।

गफूरन जैसी खाविन्द-परस्त औरत ऐसा करती है, क्योंकि यह रमजानी को खुदा का दर्जा देती है । वह एक बार खुदा से लड़ लेगी, पर अपने खाविन्द न लड़ सकेगी । पर रमजानी खुद जब उसे राँड बनाने की बात करता है, तब उसकी बर्दाश्त का बाँध टूट जाता है । इस प्रकार उसके इस गुस्से में भी उसका पति-प्रेम ही झलकता है ।

21- कुंतुली मिरासन :

कुंतुली मिरासन जाति की एक स्त्री है । रानीखेत से लेकर रियूनी-द्वारसों तक के पड़ावों में लोग उसे जानते हैं । उसका एक नाम कीड़ी हुड़क्यानी भी है, जो उसकी माँ चिपकुली ने रखा था । गाने-बजाने से लेकर शरीर के सौदे तक के काम मिरासन औरतें करती हैं । जब अँग्रेजी सरकार थी, तब इनके व्यवसाय का बोलबाला था । सामंतकाल में जमींदार, चौधरी, नवाब, राजे सरकारी अमले ये सब इनके गुण-ग्राहक होते थे । इन लोगों में लाख बुराइयां थीं, पर एक अच्छाई उनमें यह थी कि वे नृत्य-संगीत आदि कलाओं के जानकार थे और इन कलाओं की क़द्र करना जानते थे । उन दिनों में चिपकुली मिरासन का नाम रानीखेत में विख्यात था और उसकी जाहोजलाली शिखर पर थी । उस जमाने में एक अँग्रेज साहब से चिपकुली को प्रेम हो गया था, जिसने चिपकुली को बड़े लम्बे-चौड़े वादे किए थे, परन्तु बाद में जब चिपकुली को उससे गर्भ रहता है, तब वह साहब उसे ठुकरा देता है । कुंतुली इसी चिपकुली की पुत्री है । मिरासनों में पुत्री के जन्म पर उत्सव मनाया जाता है । चिपकुली की तुलना में कुंतुली सूरत की उतनी भली न सही, सीरत और अपने इल्म में चिप-कुली से इक्कीस ही थी । मगर शाही जमाना गुजर चुका था और

तीन ताल , एक ताल , ध्रुपद-धमार के शास्त्रीय राग-नृत्यों से लेकर ठुमरी तथा ठेठ पहाड़ी तर्ज की चलताऊ चीजों के गाने के बावजूद कुंतुली अपने परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पा रही थी ।

अतः अपने बुढ़ापे के सहारे के लिए उसने रामसिंह हवलदार को पकड़ा था । कश्मीर की युद्धबन्दी के समय रिलीज होकर वह घर लौटा था और ठेकेदार कुदरतसिंह के अलमोड़ा-रानीखेत की सड़कों पर ट्रक चलाया करता था । उसने अपनी घर-वाली को शराब के नशे में लतिया-लतिया कर निकाल दिया था । उन्हीं दिनों में उसकी मुलाकात कुंतुली से होती है और वह पूरी तरह से उसके मोहजाल में फंस जाता है । कुंतुली भी उसे प्यार करने लगती है । " अब पौने दो सौ दो सौ रूपये बंधे-बंधाये उसे मिल जाते हैं । उसने सड़कों पर बैठना भी छोड़ दिया । अब कुंतुली मंगलसूत्र पहनने और मांग में सिन्दूर भरने लगी । राम-सिंह हवलदार को दिन के उजाले में भी कुंतुली के अलावा कोई दूसरी सूझती ही नहीं थी । रुक्मी [ उसकी ब्याहता पत्नी ] की याद कभी-कभी आ जाती , मगर बैकवर्ड पहाड़ी वाइफ तो मेरे साथ स्लीपिंग ही करती रही , रियली मुहब्बत करना तो तुमने मुझे सिखाया । " 62

दुर्गादत्त पंडित चिपकुली से कहता है — " ऊंचे पेड़ों पर घोंसला बनाकर रहने वालाx बड़ेx पंछी चारा चुगने को तो जरूर खेतों में उतरता है , मगर बिश्रxxx विश्राम आखिर उसको अपने घोंसले में ही मिलता है । रामसिंह हवलदार ऊंची ठौर का ठाकुर है , तेरा घर-जंवाई बहुत दिनों तक रहेगा नहीं । " 63

और वैसा ही हुआ । जब से उसने सुना कि कुंतुली पेट

से है , वह उससे कतराने लगा और एक दिन अपनी ब्याहता औरत रुक्मी के पास चला गया । कुंतुली और चिपकुली कहीं उससे ढूंढती हुई न आ पहुँचे , इस डर से वह अपने ससुराल के गांव चला गया था । चिपकुली के बहुत कहने पर कुंतुली रामसिंह को ढूंढते हुए रुक्मी के घर तक पहुंच जाती है । रामसिंह अपनी सास के इलाज के लिए शहर गया हुआ था । कुंतुली ने रुक्मी को देखा , रुक्मी ने उसे खाना खिलाया था । तब तक कुंतुली ने रुक्मी को अपना असली परिचय नहीं दिया था । काफली गांव से लौटते समय कुंतुली रुक्मी से कहती है —

" मैं तो नाच-गाके भी ज़िन्दगी ठेल लूंगी , लेकिन तुम कहाँ तक मायके में पड़ी रहोगी । मैंने अपना दावा छोड़ा ... "[64]

कुंतुली रामसिंह को मिलकर उसे पुनः फंसा सकती थी , उस पर दावा ठोक सकती थी , उसकी फजीहत करा सकती थी , उससे पैसे ऐंठ सकती थी , और उसकी माँ चिपकुली उसे यही सब शिक्षा देती रही है ; फिर भी उसका यह कहना , उसका यह निर्णय उसके चरित्र को एक ऊंचाई प्रदान करता है और उसे गरिमामय बना देता है ।

## 22- "लोक देवता " कहानी की थोकदारनी :

इस कहानी का परिवेश सन् 1962 के समय का है । चीन भारत पर हमला कर देता है । गांव के बलभद्दर थोकदार को बस इतना मालूम है कि " बर्फ के बादशाह ने हमारे महाराजा नेहरू के हिमालय पर्वत पर हमला कर दिया है । "[65] अतः [illegible] थोकदार चाहते हैं कि उनके गांव के युवक भी दूसरे गांव के युवकों की भांति फौज में भर्ती होकर हिमालय के राजा की सहायता करें ।

माँ पार्वती भूमि की रक्षा के लिए गांव के जवान अपना बलिदान दें, ऐसी उच्च भावना इस अनपढ़ थोकदार में है।

परन्तु गांव के कुछ लोग अप्रकट रूप से उन युवकों को भड़काते हैं। फलतः वे फौज के लिए तैयार नहीं होते। इन युवकों में थोकदार का छोटा बेटा रूदरसिंह भी है। अतः थोकदार जब सुनते हैं कि "बिलकुल बगल के गांव से जवानों को खुद उनकी घर-वालियों, बहनों और महतारियों ने रोली-तिलक लगाकर, शंख बजाते हुए भारत-खंड की रक्षा और शत्रु-वंश के संहार के लिए बिदा किया है।" [66] तो वे अपना आपा खो बैठते हैं और खुखरी लेकर अपनी नाक काटने के लिए तैयार हो जाते हैं।

तब अचानक थोकदारनी आकर खुखरी छीन लेती है और कहती है — " अब बहुत पागलों जैसा रूप तुम भी मत दिखाओ। जरा चित्त शांत करो। रूदरिया अगर रणक्षेतर में जाने से न करेगा, तो मैं अपने हाथ से उसकी नाक काट दूंगी। मुझे भी नहीं चाहिए ऐसा कपूत, जिसकी कापुरूषाई से लजाकर बाप अपनी नाक काटने की सोचे ... लौटने दो आज छोकरे को। .... औरों की महतारियों ने छाती पिला रखी है, तो कोई हमने घुटने पिलाकर नहीं पाले-पोसे हैं बेटे।" [67]

और रूदरसिंह सचमुच में फौज में चला जाता है। इस घटना से प्रभावित होकर गांव के दूसरे युवक भी तैयार होते हैं। यहाँ थोक-दारनी का जो रूप दृष्टिगोचर होता है, वह सचमुच सामंतकालीन वीरांगना-क्षत्राणी का रूप है।

<u>23- दुर्गा :</u>

" चिट्ठी के चार अक्षर " की दुर्गा भी एक विरल नारी-

चरित्र है । दुर्गा शोबनसिंह नाई की लड़की थी । छोटी जाति की होने के कारण ठाकुर-ब्राह्मणों के लड़के उसे छेड़ते रहते थे । उसकी ठिठोली उड़ाते थे । उसे देखकर अश्लील गीत गाते थे । छिछोर ग्वाले अपने बकरों और बछड़ों को सीटियाँ और आवाजें दे-देकर दुर्गा की बकरियों और गायों की तरफ जाने को उकसाते थे ।

दुर्गा इस सबको चुपचाप सहन करती थी । तब जगत ठाकुर के लड़के परताप ठाकुर से उसका परिचय होता है । परताप इन छिछोर लड़कों को एक-दो बार पीट भी देता है । तब से उनका त्रास कम हो जाता है ।

दुर्गा और परताप में प्रणयांकुर फूटने लगता है । दुर्गा को परताप से गर्भ रहता है । परताप दुर्गा से शादी करना चाहता है, परन्तु बिरादरी तथा परिवार वालों के आगे उसकी चलती नहीं है । दुर्गा का पिता शोबनसिंह पहले तो नालिश ठोंकने की और हर्जा-खर्चा वसूलने की बात करता है । पर दुर्गा उसके लिए तैयार नहीं होती । वह कहती है कि जो भाई-बिरादरों के आतंक से कसाई की गाय बनाकर उसे त्याग चुका है, उससे हर्जा-खर्चा वसूलने में क्या सुख मिलेगा ?[68] शोबनसिंह ज्यादा जिद करता है तो दुर्गा आत्महत्या करने की धमकी देती है ।

एक बार मिलने पर वह परताप से बस इतना ही कहती है — "ऐसा ही होता है ठाकुरों का वचन ?"[69] वह बच्चा भी नहीं गिराती और कलंकिनी का शाप भोगती है । परताप भागकर फौज में चला जाता है । और जो हिम्मत पहले वह बटोर नहीं पाया था, फौज में कुछ बन जाने के बाद बटोर पाता है । वह दुर्गा को न केवल मनीआर्डर भेजता है, बल्कि चिट्ठी भी लिखता है कि अबकी छुट्टियों में वह

आयेगा तो बाकायदा शादी करके उसे अपने साथ ले जायेगा ।

इस प्रकार यहां हम देखते हैं कि दुर्गा छोटी जाति की होते हुए भी गुणवान , शीलवान् , धैर्यवान है । वह हिम्मतवाली और मेहनती है । यहाँ स्थिति का एक पहलू यह भी सामने आता है कि दुर्गा अपने पिता से टकराने का साहस भी इसीलिए कर पाती है कि काम करती है , कमाती है , खुदको तथा बच्चे को पाल-पोस सकती है ।

24- लछिमा ठकुरानी :

"उसने तो नहीं कहा था " कहानी की लछिमा ठकुरानी भी एक विशिष्ट नारी-चरित्र है । लछिमा पर "खसम टोकुवा " का कलंक लग चुका था । वह तीन बार की विधवा है । मुश्किल से 22-23 वर्ष की तरुणी है । पहली बार विधवा तब हुई थी , जब वह सात साल की थी , दूसरी बार तेरहवें वर्ष में और तीसरी बार जब वह 22 वर्ष की थी ।

शेरूमियाँ दर्जी और मणिहार दोनों था । एक बार वह लछिमा को धीरे-धीरे चूड़ियाँ चढ़ा रहा था , तब लछिमा ने व्यंग्य किया था — " मियाँ , तुम्हें भी कबर तक पहुंचना है क्या ? " और मियाँ ने जवाब दिया था — " तेरे लिए तो जीते जी कब्रिस्तान में जाने को तैयार हूँ , ठकुरानी ? "70

और लछिमा ठकुरानी लछिमा बीबी हो गई थी । कुंवरसिंह और जसवंतसिंह दोनों अभिन्न मित्र थे । फौज में थे । एक बार फौज से लौट रहे थे कि सिलंगटोला के पास चामुण्डा देवी के पास लछिमा से भेंट हो गई । तब कुंवरसिंह उसे कहता है — "मुसलमान से ब्याह करते तेरा कलेजा नहीं दरका ,

ठकुरानी ? " तब लछिमा ने कहा था — " छाछ बिलोते में रौली के फिरके गिने जाते हैं, ठाकुर ! प्यार करने में मरद का फिरका नहीं देखा जाता । जात-फिरका तो बाहर की औरत देखती है, भला अन्दर की औरत तो पुरुष की शरण चाहती है । " 71

और कुंवरसिंह लाख जात-बिरादरी वालों के टोकने के लछिमा को ले आया था । अलग से छोटा-सा घर बना लिया । एक छोटे-से सोते को बांधकर पानी का नौला बना लिया, जिसे जसवन्तसिंह "लछिमा ठकुरानी का नौला " कहता था ।

परन्तु न जाने कैसा मन है लछिमा ठकुरानी का । वह खुद कहती थी — " मुझे तो लगता है, दो पर्वतों के बीच में नदी की तरह अटक गई हूं । " 72

और यह बात वह कुंवर को भी कह देती है कि वह उन दोनों को चाहती है । कुंवर के मन में इस बात की अटक पड़ जाती है । लछिमा ठकुरानी अपने मन के इस द्वन्द्व को इस प्रकार अभिव्यक्त करती है —

" ठाकुर मेरे हृदय को चीर सकोगे ? देख सकोगे, मेरी बावली आत्मा को ? एक महतारी जैसे कई छौनों को संभालती है, ऐसे ही ममता से मैंने तुम दोनों को संभाला था । मैं तो पातर-चरित्र भ्रष्टा ही हूं ठाकुर, मगर ममता भ्रष्ट नहीं हुआ करती । तभी तो कहती हूं, या तो ईश्वर ने इतना पगला हिया दिया न होता, या द्रौपदी के जैसे पाण्डव दिए होते । मैं तो पातर-की-पातर ही बनी रही, खसम टोकने का कलंक और झेलती रही हूं । मैं कैसे चीर के दिखाऊं अपना कपाल कि खसम तो मैंने भोगे ही नहीं, छोकरों को संभालती थी,

उनसे भी दूर ही हूं ... आज से तुम अब मेरा मुंह नहीं देख पाओगे ठाकुर ... " 73

यह बात लछिमा ने जसवन्त को कही थी । उसके बाद वह जसवन्त को कभी नहीं मिली , या न उससे कोई बात की । परन्तु लछिमा को लेकर दो मित्रों में दरार तो पड़ ही गई । कई वर्षों बाद एक लड़ाई में कुंवर और जसवन्त साथ-साथ थे । दुश्मन की गोली से जसवन्त अचेत-सा हो जाता है , और उसकी नज़र सामने कुंवर पर पड़ती है । जसवन्त सोचता है कि लड़ाई के बहाने से कुंवर उस पर गोली चलायेगा और उसे मार डालेगा । पर ऐसा नहीं होता , कुंवर अपने प्राणों को जोखिम में डालते हुए , न केवल जसवन्त को बचा लेता है , उसे फौजी अस्पताल में भी पहुंचा देता है । इस प्रकार अन्ततः लछिमा की ममता रंग लाती है ।

## 25- कमला सूबेदारनी :

" सीने में धंसी आवाज " की कमला सूबेदारनी भी एक असाधारण व्यक्तित्व वाली नारी है । उसके पति लछमनसिंह सूबेदार फौज में थे और लद्दाख की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हो गये थे । पंचायती रेडियो पर पिता की मृत्यु के समाचार सुनकर सूबेदार लछमनसिंह का बेटा बौखला उठा था और तत्काल फौज में भरती होना चाहता था । पर सूबेदारनी उसे अपनी ~~अ~~x सौगंध देती है — " विधवा तो मैं हो ही चुकी हूं , आनंद , अब निपूती भी मुझे मत बना देना । "74 आनंद माँ की बात तो मान लेता है , पर उस दिन से हंसना भूल जाता है । हमेशा गुमसुम होकर बैठा रहता है । माँ ने आत्महत्या की धमकी दी थी । अतः वह फौज में नहीं जाता । पर किसी काम में उसका मन नहीं लगता और उदास-सा चेहरा लिए घूमता रहता है ।

अंततः कमला सूबेदारनी अपने मन से डर को निकाल देती है और बेटे को फौज में भरती होने की अनुमती दे देती है । लछमन सूबेदार के मौत से उसके मन में , उसके सीने में , जो आवाज़ धंस गई थी , वह उस दिन निकल जाती है ।

कुंता ठकुरानी जब कमला को इस बात के लिए उलाहना देती है , तब एक वीर-प्रसूता माता की भांति वह उसे टका-सा जवाब देती है — " जहां तक मरने-जीने का सवाल है , कुंता ठकुरानी , तुम्हारे मालिक गुमनामसिंह तो फौज में भरती नहीं हुए थे ? वो बेचारे तो घर पर ही सांप के काटे ... " 75

<u>26-रेवती :</u>

"नंगा" कहानी की रेवती एक संघर्षशील और जुझारू स्त्री है । उसका पति हरिराम ठाकुर गुमानसिंह का हलिया है । मियादी बुखार और तपेदिक में उसकी अकाल मृत्यु हो जाती है । रेवती सुन्दर है । उसका सुगठित मेहनती शरीर किसीको भी आकर्षित कर सकता है । ठाकुर को हरिराम की बीमारी का पता था । वह यह भी जानता था कि हरिराम ज्यादा जीने वाला नहीं है । अतः ठाकुर पहले से ही अपने खेत में हरिराम को मकान बांधने देता है । हरिराम और रेवती बिरादरी की बाखलियों से दूर ठाकुर के खेत में अपने मकान में रहते हैं । हरिराम की मृत्यु के बाद रेवती अपने पुश्तैनी मकान में जाना चाहती है , परंतु ठाकुर उसे रोक लेता है । रेवती युवान है , सुन्दर है , ठाकुर के बहाव में खींच जाती है । रेवती को ठाकुर से गर्भ रहता है । गर्भ गिराने के लिए ठाकुर बहुतेरे प्रयत्न करता है , पर असफल रहता है । अन्ततः यह तय होता है कि जन्म के बाद बच्चे को कोसी नदी में बहा दिया जायेगा । परन्तु बच्चा होने पर रेवती के भीतर बैठी हुई स्त्री , उसके अन्दर की महतारी , उसे ऐसा करने से रोकती है । गुमानी ठाकुर की बदनामी

होती है । अतः वह रेवती को अपने खेत से निकाल देने की बात करता है । रेवती पंचायत में जाती है । वहाँ बात जातिवाद पर चली जाती है । सारे ठाकुर एक तरफ हो जाते हैं । रेवती की बिरादरी वाले ज्यादातर ठाकुरों पर निर्भर है । अतः रेवती के चचिया ससुर सगतराम को छोड़कर कोई उसका साथ नहीं देता, बल्कि ये "कहावतों और मुहावरों के उस्ताद " 76 उल्टे रेवती को फटकारते हैं और माफीनामे पर अंगूठा लगाने को कहते हैं । तब रेवती का पुण्य-प्रकोप देखते बनता है —

" पंच महाराज लोगों , हंसों की पाँत तो जरूर गू खा गई , मगर कौवे की जात अपना धर्म नहीं छोड़ेगी । जिस दगाबाज ने थूक के चाट लिया , उसकी जमीन में पाँव रखने से मर जाना बेहतर । .... होगा कहीं परमेश्वर , तो कभी-न-कभी मेरा इन्साफ वही करेगा । मैं तो अपनी संतान की हत्या नहीं ही करूंगी । .... ठकुरानी नहीं शिल्पकारनी हूं , मिहनत-मजदूरी से गुजर करूंगी । बैल को बेच दूंगी । गैया को यहीं बाँध लूंगी , मगर हूं अगर मैं हरराम की घरवाली और इस नस्वा की महतारी , पी ××××× रखा है मैंने भी अगर अपनी महतारी का दूध — तो आज के दिन से इस गुमानी ठाकुर की जमीन और मकान में हगने-मूतने भी नहीं जाऊंगी । " 77

इस प्रकार रेवती पंचों के मुख पर कालिख पोतती हुई-सी वहाँ से निकल भागती है । गुमानी ठाकुर तथा पंच यह सोचते थे कि यदि रेवती माफीनामे पर अंगूठा लगा देगी , तो बाद में सहानुभूति और दया का नाटक रचाकर गुमानी ठाकुर से उसे कुछ दिलवा देंगे । पर रेवती तो अलग मिट्टी की निकली । उसका स्वाभिमान , उसका तेज , उसकी खुद्दारी , उसके भीतर की दुर्गा , उसके भीतर की महतारी उसे एक अलग पंक्ति में ला

बिठाती है ।

**xxxxxxx 27-जसवन्ती :**

"आकाश कितना अनंत है" की जसवन्ती भी एक पानीदार नारी-चरित्र है । शहर से लगे हुए गांवों में शहर की बहुत-सी सामाजिक बुराइयाँ फैल जाती हैं । जसवन्ती का गांव भी शहर से लगा हुआ था । ऐसे गांवों में स्त्रियों का यौन-शोषण भी खूब होता है । स्त्रियोंका व्यापरर भी यहाँ चलता है । जसवन्ती की सगाई पहले किसी गांव में हुई थी । पर बाद में दिल्ली में रहने वाले शमशेर-सिंह से उसकी शादी हो जाती है । यथा --

" शायद., वे लोग आज शामको आयें । अभी इतना ही जाना है कि उसकी दिल्ली में खुद की टेक्सी है , मकान है , जिसे शहर की भाषा में " फ्लेट " कहते हैं । गांव वाले भी यही कहते हैं कि दिल्ली शहर का टैक्सी ड्राइवर जिले के कलक्टर से भी ज्यादा कमाता है । गांव में तो xxx यह भी हवा है कि डेढ़-दो हजार दे रहा है । " 78

पर जसवन्ती के सारे सपनों पर तुषारापात हो जाता है । xx शमशेरसिंह कूचा चमेलियान की महा-गंदी बस्ती में एक कच्ची खोली में रहता है । वह ड्राइवर नहीं क्लीनर है । उसकी कोई टेक्सी भी नहीं है । शादी भी उसने उसके जैसे दो-चार लफंगों से पैसे लेकर साझे में की थी । कुछ ही दिनों में जसवन्ती पर यह हकीकत खुलती है । वह अपने साथ दरांती लेकर सोती है । शमशेरसिंह को तपेदिक है और वह कुछ दिनों का ही मेहमान है । जसवन्ती उसके लोफरनुमा दोस्तों को पास नहीं फटकने xxxx । शौहर की गालियां और लात-घूंसे खाती रहती है , पर अपनी "टेक" पर अडिग रहती

है । एक दिन वह शमशेरसिंह से कहती है —

" अब कुछ नहीं हो सकता । न तुम बदलोगे । न मैं अपने को उस हद तक गिरा सकती हूं, जहां से तुमको सुखी बनाया जा सके । तुम सिर्फ इतना करो, निभा सकते हो तो रूखे-सूखे और फटे-पुराने में दिन काट लूंगी । नहीं निभा सकते हो, तो मायके पहुंचा दो । मगर मैं हाथ जोड़ती हूं, मुझे कीचड़ में मत घसीटो । अपने संगी-साथी बदमाशों को यहां मत लाया करो । नहीं तो कभी मैं या तो हंसिये से अपना गला रेत लूंगी या एक-दो कत्ल कर डालूंगी । " [79]

28- गोमती :

"रुका हुआ रास्ता " कहानी की गोमती एक सेवा-परायण पति-भक्त नारी है । परन्तु शायद ईश्वर भी ऐसी स्त्रियों की परीक्षा लेता है । उसका पति मधनसिंह पलटन में था । दोनों में बड़ा प्यार था । परन्तु मधनसिंह पलटन में फौद हो जाता है । तब गोमती मन में सोचती है कि अब बाकी उमर बिना आधार के ही काट लेगी । परन्तु इसके साथ आर्थिक पक्ष भी जुड़ा हुआ है । ग्रामीण परिवेश की गरीब निम्न जाति की औरत अधिक दिन तक विधवा का स्वांग नहीं भर सकती । उसे किसी दूसरे के घर-बार जाना ही पड़ता है । गोमती भी साल-भर में खीमसिंह की नौली बनकर अपना नया घर-संसार चलाने लगती है । परन्तु उसका यह सुख भी ज्यादा दिन तक नहीं चलता । दोनों नंदादेवी का मेला देखने गये थे कि खीमसिंह को "लकुवाबाई " मार जाता है । उसके बायें हाथ-पैर बेकार हो जाते हैं । बैलों में सांड का-सा खीमसिंह पहले गांव-भर के नवजवानों में अलग-सा दिखाई पड़ता

था , परन्तु अब एकदम लाचार और बेबस-सा हो जाता है ।

ऐसी अवस्था में पुरुष मानसिक रूप से भी टूट जाता है । खास करके यदि पत्नी जवान और खूबसूरत हो , तो उसे तरह-तरह के बुरे विचार उसके चरित्र के सम्बन्ध में भी आते रहते हैं । स्वभाव भी उसका चिड़चिड़ा हो जाता है । गोमती सोचती है कि उसे उसके पाप का फल मिला है । पहले पति के मरने के बाद उसने यह जो दूसरा घर किया , उसे उसकी सज़ा मिली है । हालांकि उनके समाज में यह कोई नयी बात नहीं है । पति की मृत्यु के बाद स्त्री दूसरा विवाह करती ही है । परन्तु गोमती ज़रा दूसरे किस्म की स्त्री है । वह अपने पति मधनसिंह को बहुत चाहती थी , और उसका बस चलता तो वह दूसरी शादी भी कतई-कतई न करती । फिर भी वह एक ~~अपराध~~× अपराध-बोध को ढोए जा रही थी । खीमसिंह को जब लकुवा मार जाता है , तब उसका यह अपराध-बोध और भी बढ़ जाता है । तथापि तन-मन-धन से वह खीम-सिंह की सेवा करती है । घर का आधार बेकार हो जाता है । गोमती सबकुछ संभाल लेती है । खूब काम करती है । वन में हरी घास लेने जाती है , ताकि भैंस ज्यादा दूध दे और खीमसिंह को दे सके , परन्तु खीमसिंह उसका भी उलटा अर्थ निकालता है । यथा —

" अरे , कौन औरत किस लोभ से किस वन में डोलती , इसे कौन जान सकता है । जब तक मुझ पर लखुवाबाई नहीं पड़ा था , तब तक क्यों नहीं उठे तेरे चलुवा पैर जंगलों की तरफ ? अरे , मैं लूला-लाचार आदमी तुझ जैसी संड-मुसंड औरत को कैसे काबू में रख सकता ... । " 80

गोमती को खेती-बाड़ी के काम के लिए किसनसिंह का सहारा लेना पड़ता है । किसनसिंह की घरवाली गांगुली एक दिवानी-

मस्तानी औरत थी और गुलबिया ■ सिपाही के साथ भाग गई थी, अतः किसनसिंह सोचता है कि यदि गोमती भीमसिंह को छोड़कर आ जाये तो उसका घर-संसार बस जाय । अतः किसनसिंह उसे फंसाने के लिए मीठी-मीठी प्यार-भरी बातें करता रहता है । दूसरी तरफ भीमसिंह का व्यवहार दिन-ब-दिन खराब होता जाता है । वह रात-दिन उसे गाली-गलौज करता रहता है । अतः एक समय ऐसा आता है कि गोमती का मन भी चलित हो जाता है और वह किसनसिंह की नौली बनने का विचार कर लेती है, परंतु ऐन मौके पर उसका विवेक, उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगती है और वह किसनसिंह के घर से निकलकर अपने घर पहुंच जाती है । भीमसिंह बड़ी देर से उसे पुकार रहा था, क्योंकि उसे जोरों की पिशाब लगी थी । गोमती समय से पहुंच जाती है और एक पतन से बच जाती है ।

29- मिसेज ग्रीनवुड :

"मिसेज ग्रीनवुड " कहानी की मिसेज ग्रीनवुड भी मटियानी जी के कथा-साहित्य का एक अविस्मरणीय नारी-पात्र है । गुलशेर-खान शानी के उपन्यास "सांप और सीढ़ी " की धान मां की भांति यह पात्र भी हमारे मन में रस-बस जाता है । ऐसे पात्रों को भूलना बड़ा मुश्किल होता है । ये हमारी चेतना की गहरी तहों में समा जाते हैं, और समय-समय पर चेतना के बाह्य धरातल पर उभर आते हैं ।

मिसेज ग्रीनवुड पहले मिस एण्डरसन थीं । उम्र और देह के तकाजे को वश में नहीं रख सकी, इसलिए फादर ने पवित्रता का प्रतीक छीनकर, उन्हें गृहस्थ जीवन जीने की सलाह दी थी । परन्तु बाद में तो कृष्ण-भक्ति का ऐसा रंग चढ़ा कि उन्होंने

विवाह नहीं किया ।

मिरतोला के कृष्ण-भक्त स्वामी कृष्णप्रेम के दर्शन और कैलास यात्रा की लालसा से वह अल्मोड़ा आयी हुई थीं , तब व्यवस्था के सिलसिले में राबर्ट साहब से मिलना हुआ था । राबर्ट साहब की उम्र उस समय लगभग साठ के करीब थी और मिस एण्डरसन चालीस साल की थीं , मगर चेहरे की आभा और निखर आयी थी । संस्कार , शिक्षा और सौन्दर्य का त्रिवेणी-संगम मिस एण्डरसन में दृष्टिगोचर हो रहा था । दोनों की आत्माएं मिल गयीं और मिस एण्डरसन मिसेज ग्रीनवुड हो गई , क्योंकि राबर्ट साहब का पूरा नाम था -- राबर्ट ग्रीनवुड ।

राबर्ट साहब प्रकृति के भारी शौकीन थे , अतः जब अल्मोड़ा आते हैं , तो इसीको अपना वतन बना लेते हैं । निवृत्त जीवन बिताने के लिए वे अल्मोड़ा के सिंतोला वन में एक छोटा-सा काटेज बनवाते हैं — "ग्रीनवुड काटेज " ।

राबर्ट साहब ने तब कहा था — " डियर , एक छोटा-सा तुम , एक छोटा-सा हम । बहुत बड़ा बंगला हमको सूट नहीं करने को सकता । डाइनिंग-रूम का अन्दर दो कुर्सी लगाएगा । दोनों जना बैठेगा , काफी पिएगा । बात-चीत करेगा । खाना खाएगा । स्लीपिंग-रूम का अन्दर दो चारपाई लगाएगा , सो जाएगा । इस छोटा-सा बंगले के अन्दर सिरफ दो जना रहेगा , सिरफ दो जना । " 81

और ऐसा ही हुआ । तीसरा आया और राबर्ट साहब ने आँखें बन्द कर लीं । शोबन उनका नौकर था । हररोज सवेरे मिसेज ग्रीनवुड उसे जगाने जाती थी । बाइबल में प्रभु ने कहा है —

"पाप की चिकनी शिला पर पाँव टिकाने वाला, फिसलता है, तो फिर जल्दी से संभल नहीं पाता।" [82]

मिसेज ग्रीनवुड की सुषुप्त एवं अतृप्त वासनाएँ जगती हैं और शोबन से उन्हें गर्भ रहता है। राबर्ट साहब इस सदमे को बरदाश्त नहीं कर पाते और दम तोड़ देते हैं, और तब वह मासूम बच्चा मिसेज ग्रीनवुड को ग्रीनवुड साहब से भी ज्यादा ख़ूसट लगा था। और ... [83]

कहानी में कुछ स्पष्ट लिखा नहीं है, परन्तु इतना संकेत जरूर है कि या तो वह मर जाता है, या मार दिया जाता है। बरसों बीत जाते हैं। मिसेज ग्रीनवुड का चेहरा झुर्रियों से भर जाता है। वह चाहतीं तो शोबन के साथ गृहस्थी बसा सकती थीं, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। शोबन को कभी मालिक का दर्जा नहीं दिया। शोबन जब साहब के सूट ~~ब्ख्मै×~~ पहनने की या साहब के डिनर-सेट या टी-सेट के इस्तेमाल करने की बात करती है, तब वह उसे बुरी तरह से फटकार देती है। यथा --

"शोबन, साहब मर भी गया तो हमारा साहब है। तुम ज़िन्दा भी है, तो साहब का नौकर है। अपना औकात से ज्यास्ती माँगेगा, हम नहीं देने सकता।" [84]

और इसकी कुढ़न में शोबन जब "~~डिनर-सेट~~ राइस-प्लेट" तोड़ देता है, तब मिसेज ग्रीनवुड उसे बुरी तरह से डाँटकर घर से निकाल देती है। तब प्रभु ईसा-मसीह का चित्र ऊपर से गिरता है और "डिनर-सेट" को चकनाचूर कर देता है। उस समय मिसेज ग्रीनवुड बच्ची की तरह बिलख-बिलख कररोती है और कहती है --

" ओ माई गाड। अभी हम क्या करने सकता ? इन्सान

हमको तकलीफ दिया , हम उसको घर से बाहर निकाल दिया ... मगर तुम खुदा होकर उससे भी बड़ा तकलीफ दिया , तुमको कैसे घर से बाहर निकालने सकेगा ? " 85

अन्य नारी-पात्र :

उक्त विशिष्ट नारी-पात्रों के अतिरिक्त कुछ नारी-चरित्र हैं , जिनका उल्लेख आवश्यक हो जाता है । ऐसे नारी-पात्रों में "बित्ता भर सुख " कहानी की सुमित्रा , "रहमतुल्ला " कहानी की खिमुली , "संस्कार" कहानी की भगवती , " भस्मासुर"कहानी की पद्मा भौजी , "असमर्थ " कहानी की पार्वती , "छाक" कहानी की गीता मास्टरनी और उमा , "काला कौआ" कहानी की कुंती, "झुरमुट" ( कठफोड़वा ) की तारा पंडितानी और सुप्रिया सती आदि मुख्य हैं ।

निष्कर्ष :

xxxxx अध्याय के समग्रावलोकन से स्पष्ट होता है कि लेखक नारी के शक्ति-रूप पर , श्रद्धा-रूप पर , ममतामयी , स्नेहमयी महतारी-रूप , भगिनी-रूप , पत्नी-रूप पर मुग्ध मुग्ध है । जहाँ पर भी नारी का यह स्वरूप सामने आया है , लेखक उसके सामने नत-मस्तक रहा है । यहाँ लेखक की दृष्टि सामान्यतः मानवतावादी ही रही है । लेखक ने विशेषतः रेखांकित किया है कि मानवता के उच्च गुणों और मूल्यों पर किसी जाति-विशेष या वर्ग-विशेष का अधिकार नहीं है । हर जाति , वर्ग और वर्ण में कुछ ऐसे नारी-पात्र मिल जाते हैं , जिन्हें देखकर हम कविवर प्रसादजी की पंक्तियों को दोहराये बिना नहीं रह सकते कि "नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो , विश्वास रजत नग-पग तल में । "

कई बार ~~कई बार के~~ तो बल्कि यह अनुभव होता है कि कीचड़ में ही कमल खिलता हुआ दृष्टिगोचर होता है । दूसरे यहां लेखक ने नारी-निरूपण में यथार्थवादी ढंग को अपनाया है । लेखक द्वारा निरूपित ये महिमा-मंडित नारी -पात्र अंततोगत्वा तो हाड़-मांस के मानवी नारी-पात्र हैं । उनको देवी बना देने के मोह में लेखक ने उनके मानवीय पक्षों को नज़रअन्दाज नहीं किया है । ये नारी-पात्र जीवन्त है । लेखक के हाथों की कठपुतलियां नहीं हैं । चरित्र-विषयक लेखक का दृष्टिकोण भी विशाल और उदार है । यहां चरित्र की दकियानूस व्याख्या नहीं है ।

===== xxxxxx =====

:: सन्दर्भानुक्रम ::

==========

§1§ ये एक से आठ तक की सूक्तियाँ "अभिनव सूक्ति कोश " से यहाँ उद्धृत की गई हैं । : अभिनव सूक्ति कोश : डा. शरण : पृ. 195-200 ।

§2§ सुहागिनी : सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 128-129 ।

§3§ वही : वही : पृ. 132 ।

§4§ वही : वही : पृ. 134 ।

§5§ वही : वही : पृ. 137 ।

§6§ वही : वही : पृ. 137 ।

§7§ वही : वही : पृ. 138 ।

§8§ वीरखम्भा : सु.त. अ. क. : पृ. 92 ।

§9§ वही : वही : पृ. 92 ।

§10§ वही : वही : पृ. 94 ।

§11§ वही : वही : पृ. 94-95 ।

§12§ वही : वही : पृ. 95 ।

§13§ घर-गृहस्थी : सु.त.अ.क. : पृ. 102 ।

§14§ वही : वही : पृ. 110 ।

§15§ वही : वही : पृ. 107 ।

§16§ लाटी : सु.त.अ.क. : पृ. 22 ।

§17§ वही : वही : पृ. 29 ।

§18§ अंतिम तृष्णा : सु. त. अ. क. : पृ. 66 ।

§19§ वही : वही : पृ. 74 ।

=====================

सु.त.अ.क. = सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ

§20§ प्यास : त्रिज्या : पृ. 118 ।

§21§ द्रष्टव्य : चील : त्रिज्या : पृ. 95 ।

§22§ वही : वही : पृ. 100 ।

§23§ वही : वही : पृ. 101 ।

§24§ मैमूद : त्रिज्या : पृ. 105 ।

§25§ वही : वही : पृ. 106 ।

§26§ वही : वही : पृ. 106 ।

§27§ वही : वही : पृ. 106 ।

§28§ वही : वही : पृ. 113 ।

§29§ खरबूजा : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 29 ।

§30§ वही : वही : पृ. 31 ।

§31§ वही : वही : पृ. 32-33 ।

§32§ वही : वही : पृ. 37 ।

§33§ सावित्री : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 46 ।

§34§ वही : वही : पृ. 46 ।

§35§ द्रष्टव्य : गोपुली गफूरन : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 48 ।

§36§ वही : वही : पृ. 48 ।

§37§ वही : वही : पृ. 48 ।

§38§ वही : वही : पृ. 48 ।

§39§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 55 ।

§40§ अर्द्धांगिनी : भविष्य तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 12 ।

§41§ वही : वही : पृ. 15 ।

§42§ वही : वही : पृ. 25 ।

§43§ वही : वही : पृ. 30 ।

§44§ महाभोज : भविष्य तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 100 ।

§45§ वही : वही : पृ. 100-101 ।

§46§ वही : वही : पृ. 101 ।

§47§ वही : वही : पृ. 107 ।

§46§ वही : वही : पृ. 108 ।

§49§ इब्बू मलंग : चील : पृ. 47-48 ।

§50§ वही : वही : पृ. 50 ।

§51§ शरीफों का मुहल्ला : छिद्दा पहलवान वाली गली : पृ. 101 ।

§52§ वही : वही : पृ. 102 ।

§53§ वही : वही : पृ. 101 ।

§54§ अहिंसा : अतीत तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 10 ।

§55§ वही : वही : पृ. 13 ।

§56§ दैट माय फादर बालजी : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 72 ।

§57§ कालिका अवतार : मे.तैं.क. : पृ. 95 ।

§58§ वही : वही : पृ. 97 ।

§59§ पत्थर : मे.तैं.क. : पृ. 141 ।

§60§ वही : वही : पृ. 142 ।

§61§ वही : वही : पृ. 145 ।

§62§ भँवरे की जात : बर्फ की चट्टानें §बड़ा संस्करण§ : पृ. 53 ।

§63§ वही : वही : पृ. 54 ।

§64§ वही : वही : पृ. 57-58 ।

§65§ लोकदेवता : ब.च. : पृ. 60 ।

§66§ वही : वही : पृ. 63 ।

§67§ वही : वही : पृ. 64 ।

§68§ चिट्ठी के चार अक्षर : ब.च. : पृ. 79 ।

======================

ब.च. = बर्फ की चट्टानें

§69§ चिट्ठी के चार अक्षर : बर्फ की चट्टानें : पृ. 79 ।

§70§ उसने तो नहीं कहा था : ब.च. : पृ. 88 ।

§71§ वही : वही : पृ. 88 ।

§72§ वही : वही : पृ. 89 ।

§73§ वही : वही : पृ. 89 ।

§74§ सीने में धँसी आवाज़ : ब.च. : पृ. 94 ।

§75§ वही : वही : पृ. 99 ।

§76§ नंगा : ब.च. : पृ. 164 ।

§77§ वही : वही : पृ. 165 ।

§78§ आकाश कितना अनंत है : ब.च. : पृ. 222 ।

§79§ वही : वही : पृ. 227 ।

§80§ रुका हुआ रास्ता : ब.च. : पृ. 400 ।

§81§ मिसेज ग्रीनवुड : ब.च. : पृ. 412 ।

§82§ वही : वही : पृ. 415 ।

§83§ वही : वही : पृ. 415 ।

§84§ वही : वही : पृ. 416 ।

§85§ वही : वही : पृ. 418 ।